



सी.सी.आर.यू.एम.

न्यूजलेटर

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् की त्रैमासिक पत्रिका

खंड 40 • अंक 1

जनवरी-मार्च 2020

यूनानी दिवस समारोह का भव्य आयोजन

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (के.यू.चि.अ.प.) ने 11 फरवरी को भव्य रूप से यूनानी दिवस मनाया और इस अवसर पर 11-12 फरवरी 2020 के दौरान विज्ञान भवन, नई दिल्ली में यूनानी चिकित्सा पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया।

इस कार्यक्रम में यूनानी चिकित्सा हेतु आयुष पुरस्कार का वितरण, के.यू.चि.अ.प. के प्रकाशनों का विमोचन, राष्ट्रीय त्वचा रोग यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के एन.ए.बी.एच. मान्यता प्रमाणपत्र की प्रस्तुति और उद्योग प्रदर्शनी का आयोजन भी शामिल थे।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन 'यूनानी चिकित्सा द्वारा दीर्घकालिक विकास

लक्ष्य (एसडीजी-3) 'अच्छे स्वास्थ्य एवं कल्याण' की प्राप्ति की ओर' विषय पर आधारित था। इस सम्मेलन में अच्छे स्वास्थ्य एवं कल्याण की प्राप्ति में यूनानी चिकित्सा की भूमिका को उजागर किया गया और आज हम जिन स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना कर रहे हैं उनके समाधान के लिए सभी चिकित्सा पद्धतियों के एकीकरण और तालमेल की आवश्यकता पर बल दिया गया।

यूनानी चिकित्सा के विशेषज्ञों, विद्वानों तथा चिकित्सकों की उपस्थिति में यह

सम्मेलन अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण के दीर्घकालिक विकास लक्ष्य की प्राप्ति हेतु बेहतर रास्ते निकालने के लिए विचार-विमर्श और स्वस्थ चर्चा का एक अच्छा मंच साबित हुआ। सम्मेलन में उद्घाटन और समापन सत्र के अतिरिक्त पैनल चर्चा, विशेषज्ञ वार्ता और आठ वैज्ञानिक सत्र थे।

उद्घाटन सत्र

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन श्री राजनाथ सिंह, माननीय रक्षा मंत्री



11 फरवरी 2020 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में यूनानी चिकित्सा पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह के दौरान राष्ट्रगान गाते हुए गणमान्य व्यक्ति।



श्री राजनाथ सिंह



डॉ. जितेन्द्र सिंह



श्री श्रीपाद येस्सो नाईक

ने श्री श्रीपाद येस्सो नाईक, माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), आयुष मंत्रालय, डॉ. जितेन्द्र सिंह, माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय, श्री वैद्य राजेश कोटेचा, सचिव, आयुष मंत्रालय, श्री प्रमोद कुमार पाठक, अतिरिक्त सचिव, आयुष मंत्रालय, प्रो. आसिम अली खान, महानिदेशक, केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् और डॉ. मोहम्मद ताहिर, सलाहकार (यूनानी), आयुष मंत्रालय,

भारत सरकार की गरिमापूर्ण उपस्थिति में किया।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि यूनानी चिकित्सा विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं के श्रेष्ठ ज्ञान द्वारा पोषित एक अनूठी चिकित्सा पद्धति है। अपनी सुलभता, समग्रतात्मक दृष्टिकोण और किफायती होने के कारण यह देश के दूर-दराज के क्षेत्र में भी लोगों की स्वास्थ्य देखभाल की आवश्यकताएं पूरी

कर रही है। उन्होंने आगे कहा कि यह पद्धति गैर-संक्रामक रोगों सहित विभिन्न स्वास्थ्य चुनौतियों के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए डॉ. जितेन्द्र सिंह ने एक समावेशी और संकलित स्वास्थ्य देखभाल प्रवृत्ति की आवश्यकता पर ज़ोर दिया जिससे भविष्य में स्वास्थ्य नीतियों और कार्यक्रमों की योजना बनाने में मार्गदर्शन मिल सके। उन्होंने ज़ोर दिया कि स्वास्थ्य देखभाल की समग्र प्रणालियों में विशेषतः दीर्घकालीन, गैर-संक्रामक एवं सर्वांगी रोगों की रोकथाम और उपचार के संबंध में लोगों की दिलचस्पी का विश्वव्यापी पुनरुत्थान हुआ है।

अपने सम्बोधन में श्री श्रीपाद येस्सो नाईक ने कहा कि यूनानी चिकित्सा अपने किफायती उपचारों से बढ़ती उम्र की स्वास्थ्य चुनौतियों, दीर्घकालीन रोगों के संकट, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन से संबंधित स्वास्थ्य संकट तथा गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच की कमी का समाधान कर सकती है। उन्होंने कहा कि आयुष मंत्रालय



अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में उपस्थित गणमान्य अतिथियों एवं श्रोताओं का एक दृश्य।

लोगों को निवारक, प्रोत्साहक और समग्र स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने में आयुष पद्धतियों की वास्तविक क्षमता का उपयोग करने पर ध्यान केंद्रित किए हुए है।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए वैद्य राजेश कोटेचा ने स्वास्थ्य देखभाल वितरण प्रणाली में पारंपरिक चिकित्सा पद्धति को और अधिक सुलभ बनाने के माध्यम से स्वास्थ्य के लिए बहुलवादी और एकीकृत दृष्टिकोण की बात कही। उन्होंने आयुष स्वास्थ्य देखभाल वितरण में सूचना प्रौद्योगिकी को शामिल करने



प्रो. आसिम अली खान, श्री अतुल कोच्चर, मुख्य निष्पादन अधिकारी और श्री आर.पी. सिंह, महासचिव, एन.ए.बी.एच., भारतीय गुणवत्ता परिषद् से रा.त्व.रो.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद का एन.ए.बी.एच. मान्यता प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए।



वैद्य राजेश कोटेचा

चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (रा.त्व.रो. का भी गवाह बना।

यू.चि.अ.सं.) में उन्नयन करने के लिए माननीय आयुष मंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया।

पैनल चर्चा

यह अवसर श्री आर.पी. सिंह, महासचिव और श्री अतुल कोच्चर, मुख्य निष्पादन अधिकारी, एन.ए.बी.एच., भारतीय गुणवत्ता परिषद् द्वारा महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. को रा.त्व.रो. यू.चि.अ.सं., हैदराबाद के लिए एन.ए.बी.एच. मान्यता प्रमाणपत्र की प्रस्तुतिकरण

पैनल चर्चा सत्र 'पारंपरिक स्वास्थ्य ज्ञान: समकालीन स्वास्थ्य देखभाल हेतु अभिनव समाधान' विषय पर आधारित था। प्रो. सैय्यद एहतेशाम हसनैन, कुलपति, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली और प्रो. राम विश्वकर्मा, निदेशक, भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू सत्र के सभापति थे जबकि डॉ. डी.एस.

की आवश्यकता पर जोर दिया और मंत्रालय की सूचना प्रौद्योगिकी पहलों पर प्रकाश डाला।

इससे पहले अपने स्वागत सम्बोधन में प्रो. आसिम अली खान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने कहा कि के.यू.चि.अ.प. यूनानी चिकित्सा में अनुसंधान और विकास के अपने दायित्व के निर्वाह के लिए अच्छी तरह काम कर रही है। उन्होंने केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (के.यू.चि.अ.सं.), हैदराबाद का राष्ट्रीय त्वचा रोग यूनानी



अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में उपस्थित अतिथि एवं श्रोतागण।



‘पारंपरिक स्वास्थ्य ज्ञान: समकालीन स्वास्थ्य देखभाल के लिए अभिनव समाधान’ पर आधारित पैनल चर्चा सत्र के पैनलिस्ट और महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प.।

गंगवार, अतिरिक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, प्रो. कुंवर मोहम्मद यूसुफ अमीन, इल्मुल अदविया विभाग, अजमल खान तिब्बिया कॉलेज, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, डॉ. डब्ल्यू सेल्वामूर्ति, अध्यक्ष, एमिटी सांइस, टेक्नोलॉजी एण्ड इनोवेशन फाउंडेशन और महानिदेशक, एमिटी डारेक्टोरेट ऑफ सांइस एण्ड इनोवेशन, नोएडा, प्रो. रितु प्रिया, सेंटर ऑफ सोशल मेडिसिन एण्ड कम्युनिटी हेल्थ, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई

दिल्ली, प्रो. इमामुद्दीन अहमद, पूर्व प्रधानाचार्य, सरकारी यूनानी चिकित्सीय कॉलेज, चेन्नई, डॉ. एस. फारूक, अध्यक्ष, हिमालय ड्रग कंपनी, श्री प्रदीप मुल्तानी, उपाध्यक्ष, पीएचडी चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्री एवं अध्यक्ष, मुल्तानी फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड और हकीम मोहसीन देहलवी, महासचिव, यूनानी ड्रग मेन्युफेक्चरर्स एसोसिएशन (उडमा), नई दिल्ली ने पैनलिस्ट के रूप में भाग लिया।

सत्र का आरंभ सत्र के मध्यस्थों और पैनलिस्टों के प्रति स्वागत टिप्पणी

के साथ हुआ। अपनी आरंभिक टिप्पणी में प्रो. सैय्यद एहतेशाम हसनैन ने कहा कि कोरोनावाइरस जैसी नई स्वास्थ्य चुनौतियों के मद्देनज़र उनके समाधान के लिए यूनानी चिकित्सा व अन्य पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों की प्रासंगिकता का पता लगाने की आवश्यकता है।

सत्र को संबोधित करते हुए प्रो. राम विश्वकर्मा ने इस सत्य को उजागर किया कि आधुनिक चिकित्सा पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों से काफी लाभान्वित हुई है। उन्होंने आगे कहा कि सीएनएस विकारों में इस्तेमाल होने वाली लगभग सभी दवाएं, क्लीनिक में इस्तेमाल होने वाले सभी कैंसररोधी यौगिक पदार्थ और एंटीबायोटिक दवाएं पारंपरिक चिकित्सा से ली गई हैं। इसलिए आधुनिक चिकित्सा के साथ पारंपरिक चिकित्सा का एकीकरण कोई नई बात नहीं है।

डॉ. डब्ल्यू सेल्वामूर्ति ने कहा कि यूनानी चिकित्सा मनुष्य को समग्र रूप से देखती है, यह मनुष्य के शारीरिक, मानसिक और अध्यात्मिक अस्तित्व को



अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में राष्ट्रगान गाते हुए विशिष्ट अतिथि एवं श्रोता।

ध्यान में रखती है।

प्रो. यूसुफ अमीन ने इस बात पर जोर दिया कि यूनानी चिकित्सा और अन्य पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के माध्यम से समकालीन स्वास्थ्य समस्याओं का अभिनव समाधान खोजने के लिए उन्हें उनके आप्तिवक समकक्ष में बदलने के बजाय उनकी अपनी पैथोलोजिकल और फॉर्माकोलोजिकल योजनाओं के अनुसार देखना और उपयोग करना होगा।

डॉ. डी.एस. गंगवार ने हमारे जीवन में पारंपरिक चिकित्सा के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि आयुष चिकित्सा पद्धतियों के माध्यम से उच्च रक्तचाप, मोटापा, कोरोनरी धमनी रोगों जैसे जीवन शैली संबंधी अधिकतर विकारों को रोका जा सकता है।

प्रो. रितु प्रिया ने सतत् स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली और पर्यावरण अखंडता पर जोर दिया। उन्होंने देश में फार्मास्युटिकल उद्योग और उससे होने वाले प्रदूषण के बारे में चर्चा की। उन्होंने इस बारे में भी बात की कि प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में किस प्रकार से नवीनता ला सकती है।

डा. एस. फारुक ने आयुष चिकित्सा पद्धतियों को मानव जाति के लिए एक आशीर्वाद बताया और यूनानी चिकित्सा तथा प्राकृतिक पोषक तत्वों जैसे आम और जामुन पर और अधिक शोध करने की आवश्यकता पर बल दिया।

प्रो. ईमामुद्दीन अहमद ने यूनानी चिकित्सा के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि मधुमेह, कोरोनरी हृदय रोग इत्यादि के उपचार के लिए आधुनिक



डॉ. डी.एस. गंगवार

चिकित्सा पद्धति की तुलना में यह पद्धति कहीं अधिक कुशल है। उन्होंने आगे कहा कि यूनानी चिकित्सा में सोरायसिस और ल्यूकोडर्मा जैसे रोगों का उपचार मौजूद है।

श्री प्रदीप मुल्तानी ने चीनी चिकित्सा पद्धति की स्थिति के बारे में चर्चा की और भारतीय चिकित्सा पद्धतियों जैसे यूनानी और आयुर्वेद के चिकित्सकों को

इससे सीख लेने और इन पद्धतियों के माध्यम से देश के अच्छे स्वास्थ्य के लिए आगे आने को कहा।

हकीम मोहसिन देहलवी ने यूनानी औषधियों में चीनी की मात्रा के बारे में चर्चा की और उसके समाधान की आवश्यकता पर जोर दिया क्योंकि चीनी की अधिक मात्रा स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं है।

डॉ. अमानुल्लाह, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) वैज्ञानिक-III, डॉ. तमन्ना नाज़ली, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी), डॉ. शमीम, अनुसंधान सहयोगी (यूनानी) और डॉ. कविता नेगी, अनुसंधान सहयोगी (वनस्पति), के.यू.चि.अ.प. सत्र के प्रतिवेदक थे।

विशेषज्ञ वार्ता

विशेषज्ञ वार्ता सत्र में डॉ. ए. वेंकट रमन, प्रबंधन अध्ययन संकाय, दिल्ली



प्रो. आसिम अली ख़ान और विशेषज्ञ वार्ता सत्र के वक्ता – प्रो. टी.सी. जेम्स, डॉ. ए. वेंकट रमन और डॉ. अतुल मोहन कोचर।

विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, डॉ. अतुल मोहन कोच्चर, मुख्य निष्पादन अधिकारी, नेशनल एक्स्टेंडिशन बोर्ड फॉर हॉस्पिटल्स एण्ड हेल्थकेयर प्रोवाइडर्स, नई दिल्ली और प्रो. टी.सी. जेम्स, विजीटिंग फेलो, रिसर्च एण्ड इन्फॉर्मेशन सिस्टम फॉर डेवेलपिंग कंट्रीज़, नई दिल्ली वक्ता के रूप में थे।

डॉ. ए. वेंकट रमन ने अपने विशेषज्ञ वार्ता में 'स्वास्थ्य प्रणाली प्रवर्तकों और उनकी चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए एसडीजी-3 की प्राप्ति में चुनौतियाँ' पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य के नैदानिक पहलुओं पर ही नहीं बल्कि स्वास्थ्य संरक्षण और रोग प्रतिरक्षण से संबंधित सामाजिक से लेकर आर्थिक पहलुओं पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्होंने एसडीजी-3 के लक्ष्यों की प्राप्ति में मानव संसाधनों की महत्वपूर्ण भूमिका को विस्तारपूर्वक बताया और निजी क्षेत्र एवं गैर-सरकारी संगठनों के साथ साझेदारी तथा श्रमशक्ति के उचित प्रशिक्षण पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि हितधारकों की

जवाबदेही और ज़िम्मेदारी तथा प्रणालियों की पारदर्शिता सफलता की कुंजी है और बताया कि संबंधित क्षेत्रों के बीच व्यापक योजनाबंदी, कुशल समन्वय और संचालन स्वास्थ्य निर्धारकों पर काबू पाने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

डॉ. अतुल मोहन कोच्चर ने अपनी वार्ता में 'स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं में गुणवत्ता आश्वासन का महत्व' पर व्याख्यान दिया। उन्होंने स्वास्थ्य क्षेत्र में गुणवत्ता आश्वासन के महत्व और नेशनल एक्स्टेंडिशन बोर्ड फॉर हॉस्पिटल्स एण्ड हेल्थ केयर प्रोवाइडर्स (एन.ए.बी.एच.) और नेशनल एक्स्टेंडिशन बोर्ड फॉर टेस्टिंग एण्ड केलिब्रेशन लेबोरेटरीज़ (एन.ए.बी.एल.) की भूमिका पर प्रकाश डाला।

प्रो. टी.सी. जेम्स ने एसडीजी-3 को प्राप्त करने में पारंपरिक चिकित्सा की भूमिका पर एक विस्तृत व्याख्यान दिया और इस बात पर जोर दिया कि यह सतत पर्यावरण के साथ-साथ व्यक्ति और समुदाय की पोषण, शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं

सहित एकीकृत विकास के सिद्धांतों का पालन करती है। उन्होंने बताया कि पारंपरिक चिकित्सा में सुलभता एवं स्वीकार्यता, सुरक्षा, समग्र और व्यक्तिगत दृष्टिकोण एवं सामर्थ्य का अनूठा संयोजन है जो एसडीजी-3 के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक हैं।

डॉ. मोहम्मद फाज़िल, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) वैज्ञानिक-IV, डॉ. अहमद सईद, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) वैज्ञानिक-III और डॉ. शगुप्ता परवीन, अनुसंधान सहयोगी (यूनानी), के.यू.चि.अ.प. सत्र के प्रतिवेदक थे।

वैज्ञानिक सत्र-I

वैज्ञानिक सत्र-I 12 फरवरी 2020 को आयोजित किया गया जोकि 'वैश्विक स्वास्थ्य हेतु यूनानी चिकित्सा' विषय पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता प्रो. अहमद कमाल, उपकुलपति, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली, डॉ. एस.जे.एस. फलोरा, निदेशक, राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, रायबरेली, प्रो. मो. अब्दुल मन्नान, कुलपति, हमदर्द



प्रो. आसिम अली खान 'विश्व स्वास्थ्य के लिए यूनानी चिकित्सा' पर आधारित वैज्ञानिक सत्र-I के विख्यात अतिथिगण के साथ समूह चित्र में।



विश्वविद्यालय, बांग्लादेश, डॉ. मो. अशरफ़ गनी, एंडोक्राइनोलॉजी एवं मेटाबोलिज्म विभाग, शेर-ए-कश्मीर इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेज़, श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर और डॉ. मुनव्वर हुसैन काज़मी, उप निदेशक प्रभारी, राष्ट्रीय त्वचा रोग यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद ने की।

डॉ. रॉय उपटन, अध्यक्ष, अमेरिकन हर्बल फार्माकोपिया, अमेरिका ने 'हर्बल चिकित्सा हेतु औषधीय मानक' पर अपनी प्रस्तुति दी और स्वास्थ्य देखभाल के लिए एकीकृत दृष्टिकोण पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि 'अक्सर आधुनिक शोध को पारंपरिक ज्ञान से अच्छा प्रस्तुत किया जाता है जबकि वास्तव में आधुनिक चिकित्सा में अभ्यास किया जाने वाला सबकुछ साक्ष्य पर आधारित नहीं होता और काफी कुछ पारंपरिक ज्ञान साक्ष्यों पर आधारित होता है।

डॉ. एम.यू.जेड.एन. फरज़ाना, वरिष्ठ लेक्चरर, स्वदेशी चिकित्सा संस्थान, कोलम्बो विश्वविद्यालय, श्रीलंका ने 'ईलाज बिल-गिजा' (आहार चिकित्सा): यूनानी उपचार की मूल विधि – एक समीक्षा' पर अपनी प्रस्तुति में यूनानी चिकित्सा में आहार के माध्यम से भोजन एवं उपचार के महत्व पर प्रकाश डाला और कैलोरी के मूल्य और अम्लाभ के उत्पादन के अनुसार आहार का वर्गीकरण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि यूनानी चिकित्सा में उच्च रक्तचाप, मधुमेह, डिस्लिपिडेमिया जैसे कई जीवनशैली विकारों का उपचार केवल आहार चिकित्सा और जीवनशैली में बदलाव या इनके साथ फार्माकोथेरेपी की सहायता से होता है।

डॉ. मुजीब हुसैन, समन्वयक, यूनानी तिब्ब, स्कूल ऑफ़ कम्युनिटी एण्ड हेल्थ साइंसेज़, यूनिवर्सिटी ऑफ़ वैस्टर्न केप, साउथ अफ्रीका ने 'यूनानी चिकित्सा शिक्षा और अभ्यास में आध्यात्मिकता और आध्यात्मिक देखभाल की भूमिका' पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया और यूनानी चिकित्सा शिक्षा और अभ्यास में आध्यात्मिकता और आध्यात्मिक देखभाल की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला।

डॉ. मास्टर अलगन गोविन्दन, सचिव, मलेशिया आयुषपैथी संघ, मलेशिया ने 'मलेशिया में यूनानी चिकित्सा के अभ्यास का अवसर' पर अपना पत्र प्रस्तुत किया और बताया कि 95% मलेशियाई महिलाएं प्रजनन संबंधी स्वास्थ्य समस्याओं के लिए उत्पाद ऑनलाइन खरीदती हैं जिनमें से लगभग 60% यूनानी चिकित्सा से होते हैं और मलेशिया की 95% वृद्ध आबादी जेरीएट्रिक और एंटी-एजिंग थेरेपी के लिए यूनानी औषधि खरीदती है।

सत्र का पांचवां शोध पत्र प्रो. अरमान ज़रगरान, समन्वयक, अन्तर्राष्ट्रीय पारंपरिक चिकित्सा प्रशासन, स्वास्थ्य मंत्रालय और प्रोफ़ेसर, फ़ारसी चिकित्सा

स्कूल, तेहरान ने 'एविसेना के ज्ञान के अनुसार नई औषधियों की खोज – कार्पल टनल सिंड्रोम (सीटीएस) हेतु पारंपरिक कैमोमाइल तेल का एक उदाहरण' प्रस्तुत किया और दावा किया कि लक्षणों तथा शारीरिक कार्यों पर इसके सुधार प्रभाव और कुछ इलेक्ट्रोडायग्नोस्टिक मापदंडों पर इसके न्यूनतम प्रभाव के कारण कैमोमाइल तेल सीटीएस रोगियों में एक पूरक उपचार के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

डॉ. प्रदीप कुमार, अनुसंधान अधिकारी (पैथोलॉजी) वैज्ञानिक-IV, डॉ. मोख़्तार आलम, अनुसंधान अधिकारी (वनस्पति) और डॉ. सोफ़िया नौशीन, अनुसंधान सहयोगी (यूनानी), के.यू.चि.अ.प. सत्र के प्रतिवेदक थे।

वैज्ञानिक सत्र-II

वैज्ञानिक सत्र-II 'यूनानी चिकित्सा में आधुनिक अनुसंधान' विषय पर था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. जी.पी. तलवार, अनुसंधान निदेशक, तलवार अनुसंधान फाउंडेशन, नई दिल्ली, डॉ. डी.एस. गंगवार, अतिरिक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण



वैज्ञानिक सत्र-II की अध्यक्षता करते हुए विशेषज्ञ

मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, डॉ. माजिद अहमद तलीकोटी, सर्जिकल ऑन्कोलॉजी विशेषज्ञ, बत्रा अस्पताल, नई दिल्ली, प्रो. मोहम्मद फैसल, सह-आचार्य, ओरल एंड डेंटिस्ट्री विभाग, डेंटिस्ट्री संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली, हकीम मोहसिन देहलवी, महासचिव, उडमा, नई दिल्ली और डॉ. मोहम्मद फ़ाज़िल अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) वैज्ञानिक-IV एवं प्रभारी, हकीम अजमल ख़ान साहित्य एवं एतिहासिक यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ने की।

प्रो. मोहम्मद अख़्तर सिद्दीकी, मुआलजात विभाग, यूनानी चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान स्कूल, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली, प्रो. एस. रईसुद्दीन, चिकित्सा तत्व विज्ञान एवं विषविज्ञान विभाग, रासायनिक एवं जीवनविज्ञान स्कूल, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली, प्रो. तनवीर नवेद, एमिटी फार्मसी संस्थान, एमिटी विश्वविद्यालय, नोएडा,

प्रो. इफ़्त ज़रीन अहमद, जैव अभियांत्रिकी विभाग, इंटीग्रल यूनिवर्सिटी, लखनऊ और डॉ. किरन संजय भीसे, प्रोफ़ेसर, फार्मास्यूटिक्स और प्रद्यानाचार्य, एम.सी.ई. सोसायटी एलाना कैंपस, पुणे सत्र के वक्ता थे।

प्रो. सिद्दीकी ने 'यूनानी चिकित्सा में लीवर फाइब्रोसिस और सिरोसिस का उपचार' पर व्याख्यान दिया और दीर्घकालीन यकृत रोग के लिए यूनानी औषधियों पर अपने द्वारा किए गए एक अध्ययन के परिणामों पर चर्चा की। प्रो. रईसुद्दीन ने 'जैविक प्रतिक्रिया संशोधक के रूप में कुशताजात' पर अपना पेपर प्रस्तुत किया और धातुओं एवं खनिजों से युक्त औषधियों तथा यूनानी चिकित्सा में उपयोग किए जाने वाले महत्वपूर्ण कुशताजात की चर्चा की।

प्रो. तनवीर नवेद ने 'न्यूट्रास्यूटिकल: भारत में आधुनिक प्रगति और विनियामक पहलू' पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने न्यूट्रास्यूटिकल्स के वर्गीकरण

एवं क्षेत्र तथा बाज़ार में उपलब्ध विभिन्न न्यूट्रास्यूटिकल्स के बारे में चर्चा की और भारत में न्यूट्रास्यूटिकल्स की पंजीकरण प्रक्रिया प्रस्तुत की।

प्रो. इफ़्त ने 'विभिन्न अंकुरण चरणों में नाइजेला सैटिवा सत्त की हिपेटोप्रोटेक्टिव गतिविधि का इन-विट्रो और इन-विवो अध्ययन' पर अपनी प्रस्तुति दी। उन्होंने इस औषधि पर अपने द्वारा किए गए अध्ययन के बारे में बताया और स्पष्ट किया कि नाइजेला सैटिवा के मेथेनॉलिक अंकुर सत्त ने पीसीएम-प्रेरित हेपेटोटॉक्सिसिटी में उच्च सुरक्षात्मक गतिविधि दिखाई।

डॉ. किरन संजय भीसे सत्र के अंतिम वक्ता थे जिन्होंने 'यूनानी सोरिसिसनिरोधी स्थानीय नैनोपार्टिकुलेट औषधि वितरण प्रणाली' पर प्रस्तुति दी और इस विषय पर विस्तार से चर्चा की।

डॉ. अब्दुल रहीम, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) वैज्ञानिक-IV, डॉ. मुस्तेहसन, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी)



वैज्ञानिक सत्र-III के अध्यक्ष, वक्ता और समन्वयक

वैज्ञानिक-II और डॉ. रज़्ज़ांदा तैय्यब, तकनीकी अधिकारी (यूनानी), के.यू.चि. अ.प. सत्र के प्रतिवेदक थे।

वैज्ञानिक सत्र-III

वैज्ञानिक सत्र-III 'दीर्घकालिक विकास लक्ष्य (एसडीजी-3) की प्राप्ति' पर केन्द्रित था। सत्र की अध्यक्षता प्रो. सुरेन्द्र सिंह, फार्माकोलॉजी विभाग, एम्स, नई दिल्ली, डॉ. ख़ालिद बिन इब्राहीम, निदेशक, सेलांगोर राज्य स्वास्थ्य विभाग, मलेशिया, डॉ. मुश्ताक अहमद, पूर्व निदेशक, केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद, प्रो. सैय्यद महताब अली, यूनानी चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान स्कूल, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली, डॉ. शगुफ़ता परवीन, प्रभारी, क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली और डॉ. एन. ज़हीर अहमद, प्रभारी, क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, चेन्नई ने की।

डॉ. गायत्री व्यास महिन्द्रू, निदेशक, नेशनल एक्स्टेंडिशन बोर्ड फॉर हॉस्पिटल्स एण्ड हेल्थ केयर प्रोवाइडर्स, नई दिल्ली, डॉ. मोहम्मद अकरम, तहफ़ुज़ी व समाजी तिब्ब विभाग, यूनानी चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान स्कूल, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली, डॉ. जुगल किशोर, विभागाध्यक्ष, सामुदायिक चिकित्सा, वी.एम.एम.सी. एवं सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली और डॉ. एस.एम. आरिफ़ ज़ैदी, जराहत विभाग, यूनानी चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान स्कूल, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली वक्ता थे। उन्होंने क्रमशः 'आयुष अस्पतालों के लिए मानकों का विकास', 'यूनानी चिकित्सा में निवारक स्वास्थ्य देखभाल की

अवधारणा', 'भारतीय राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम की झलक' और 'बर्गर रोग की स्थिति में सफल यूनानी हस्तक्षेप' पर चर्चा की।

डॉ. निग़हत अंजुम, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) वैज्ञानिक-III, डॉ. उसामा अकरम, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) और डॉ. फौज़िया बशीर, अनुसंधान सहयोगी (यूनानी), के.यू.चि. अ.प. सत्र के प्रतिवेदक थे।

वैज्ञानिक सत्र-IV

'यूनानी चिकित्सा में नवीन अनुसंधान' वैज्ञानिक सत्र-IV का विषय था। सत्र की अध्यक्षता प्रो. मोहम्मद ज़ाहिद अशरफ़, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली, डॉ. एस.के. राजपूत, निदेशक, एआईआईएसएम एवं प्रोफ़ेसर, एमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ़ फार्मसी, एमिटी विश्वविद्यालय, नोएडा और डॉ. हकीमुद्दीन, प्रभारी, क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, भद्रक ने की। सत्र में डॉ. एम. रसूल, जैवविज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संकाय, वी.आई.टी. विश्वविद्यालय, वेल्लोर, प्रो. फ़रहान

जलीस अहमद, औषध विज्ञान विभाग, औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान स्कूल, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली, डॉ. अल्पना एस. मोघे, प्रमुख, कोशिका एवं आणविक जीवविज्ञान विभाग, राजीव गांधी सूचना प्रौद्योगिकी एवं जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, भारती विद्यापीठ, पुणे और डॉ. अर्पिता राय, सहायक प्रोफ़ेसर, दन्त चिकित्सा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली द्वारा क्रमशः 'संधिवात गठिया (वजाउल मफ़ासिल) के उपचार में जैव रासायनिक और प्रतिरक्षात्मक मापदंडों के संदर्भ में एक यूनानी मिश्रण माजून उश्बा की प्रभावकारिता - एक प्रयोगात्मक अध्ययन', 'पारंपरिक चिकित्सा में नयी औषधि वितरण तंत्र की खोज', 'हेपेटोसेल्यूलर कार्सिनोमा पर कैंसररोधी प्रभाव हेतु पारंपरिक यूनानी पादप उत्पादों और उनके अवयवों का वैधीकरण' और 'प्रारंभिक-मध्यवर्ती चरण मौखिक सबम्यूकोस फाइब्रोसिस वाले रोगियों के उपचार में एलोपैथिक एंटीऑक्सिडेंट्स के साथ यूनानी मिश्रण जरूर-ए-कुला और जवारिश आम्ला सादा की तुलना' पर चार प्रस्तुतियां थीं।



डॉ. हकीमुद्दीन, डॉ. एस.के. राजपूत और प्रो. ज़ाहिद अशरफ़ वैज्ञानिक सत्र-IV की अध्यक्षता करते हुए।



‘चिकित्सा पर्यटन – पारंपरिक चिकित्सा हेतु एक आशाजनक क्षेत्र’ और ‘जराचिकित्सा देखभाल हेतु यूनानी चिकित्सा और मस्कुलोस्केलेटल विकारों में संघटित चिकित्सा की भूमिका’ पर संयुक्त सत्र का एक दृश्य।

डॉ. आर.पी. मीणा, अनुसंधान अधिकारी (रसायन) वैज्ञानिक-III, डॉ. फरह अहमद, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) और डॉ. अन्जु, अनुसंधान सहयोगी (यूनानी), के.यू.चि.अ.प. सत्र के प्रतिवेदक थे।

वैज्ञानिक सत्र-V एवं VII

सत्र-V ‘चिकित्सा पर्यटन – पारंपरिक चिकित्सा हेतु एक आशाजनक क्षेत्र’ विषय जबकि सत्र-VII ‘जराचिकित्सा देखभाल हेतु यूनानी चिकित्सा और मस्कुलोस्केलेटल विकारों में संघटित चिकित्सा की भूमिका’ विषय पर विचार-विमर्श के लिए समर्पित था। समय के अभाव के कारण दोनों सत्र संयुक्त चलाये गए। इन सत्रों की अध्यक्षता प्रो. वाई.के. गुप्ता, अध्यक्ष, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भोपाल, डॉ. पी.के. सेन, अतिरिक्त महानिदेशक, स्वास्थ्य सेवा, नई दिल्ली, श्री अरुण श्रीवास्तव, उप महानिदेशक, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, डॉ. एम.ए. वहीद, अध्यक्ष, यूनानी

फार्माकोपिया समिति, भारत सरकार, नई दिल्ली, प्रो. एस. शाकिर जमील, पूर्व महानिदेशक, केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, प्रो. एम. ए. जाफरी, इल्मुल अदविया विभाग, यूनानी चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान स्कूल, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली, सुश्री अमीना अल-हैदान, निदेशक, लोटस हॉलिस्टिक इंस्टीट्यूट, अबू धाबी, डॉ. मकबूल अहमद खान, प्रभारी, केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, डॉ. सरफराज अहमद, उप निदेशक, क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, अलीगढ़ और डॉ. हसीब आलम, प्रभारी, क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, मुम्बई ने की।

डॉ. दीपिका गुणावत, वरिष्ठ परामर्शदाता, मैक्स मल्टी स्पेशलिटी सेंटर, नई दिल्ली, डॉ. कलाउडिया प्रेकल, इंटरकल्वरल ट्रेनर, यूनिवर्सिटी ऑफ रूर, बोचुम, जर्मनी और डॉ. रवि रेड्डी, श्री श्री तत्त्वा, बेंगलुरु ने क्रमशः ‘कल्याण केंद्रों की स्थापना हेतु साधन’,

‘कल्याण से बढ़कर – चिकित्सा पर्यटन के लिए स्नान, स्नान गृह और हम्माम की भूमिका’ और ‘चिकित्सा पर्यटन, पारंपरिक चिकित्सा के प्रोत्साहन हेतु एक रणनीति’ पर अपनी प्रस्तुतियां दीं।

प्रो. मो. अनवर, इलाज बित तदबीर विभाग, यूनानी चिकित्सा संकाय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ और डॉ. एस.एम. अब्बास जैदी, सरकारी यूनानी चिकित्सा कॉलेज, भोपाल ने क्रमशः ‘वृद्ध लोगों में स्वास्थ्य प्रोत्साहन हेतु संघटित चिकित्सा’ और ‘यूनानी चिकित्सा में नाक से मस्तिष्क तक औषधि प्रवेश की अवधारणा’ पर व्याख्यान दिया।

डॉ. सलीम सिद्दीकी, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) वैज्ञानिक-IV, डॉ. जमाल अख्तर, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) वैज्ञानिक-III, डॉ. बिलाल अहमद, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) वैज्ञानिक-III, डॉ. नीलम कुददुसी, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) वैज्ञानिक-III, डॉ. नुसरत जहां, अनुसंधान सहयोगी (यूनानी) और डॉ.



वैज्ञानिक सत्र-VI के अध्यक्ष

जेबा आफरीन, अनुसंधान सहयोगी (यूनानी), के.यू.चि.अ.प. सत्र के प्रतिवेदक थे।

वैज्ञानिक सत्र-VI

वैज्ञानिक सत्र-VI का आयोजन 'माँ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवा में एक एकीकृत दृष्टिकोण' विषय पर किया गया। सत्र की अध्यक्षता प्रो. अब्दुल वदूद, निदेशक, राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान, बेंगलुरु, प्रो. एम.एम. वामिक अमीन, अध्यक्ष, माहियत अल-अमराज विभाग, अजमल खान तिब्बिया कॉलेज, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, डॉ. मुख्तार अहमद कासमी, संयुक्त सलाहकार (यूनानी), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार और डॉ. यूनुस इफ़तेखार मुंशी, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) वैज्ञानिक-IV और प्रभारी, क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, कोलकाता ने की। सत्र में प्रो. सुहेल फातिमा, डीन, यूनानी चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान स्कूल, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली, डॉ. परमीत कौर, मुख्य आहार विशेषज्ञ,

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली, प्रो. शेख शाहुल हमीद, अध्यक्ष, अतफाल विभाग, मरकज़ यूनानी चिकित्सा कॉलेज, कोझीकोड और प्रो. सैयेदा आमीना नाज़, अमराज-ए-निस्वां व अतफाल विभाग, यूनानी चिकित्सा संकाय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ द्वारा क्रमशः 'माँ एवं शिशु स्वास्थ्य हेतु एकीकृत दृष्टिकोण', 'माँ एवं शिशु हेतु आहार अनुशंसा', यूनानी चिकित्सा पद्धति में शिशु स्वास्थ्य देखभाल' और 'मासिक



वैज्ञानिक सत्र-VIII में प्रस्तुतिकरण की अध्यक्षता करते हुए विशेषज्ञ।

धर्म के विकारों का उपचार – कुछ रोगियों पर अध्ययन' विषयों पर चार प्रस्तुतियां थीं।

डॉ. असमा सत्तार, अनुसंधान अधिकारी (रसायन) वैज्ञानिक-III, डॉ. अज़मा, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) वैज्ञानिक-III और डॉ. साद अहमद, परामर्शदाता (यूनानी), के.यू.चि.अ.प. सत्र के प्रतिवेदक थे।

वैज्ञानिक सत्र-VIII

वैज्ञानिक सत्र-VIII 'मानसिक स्वास्थ्य और श्वसन रोग हेतु यूनानी चिकित्सा' पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता प्रो. सऊद अली खान, प्रधानाचार्य, अजमल खान तिब्बिया कॉलेज, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, प्रो. मो. इदरीस, प्रधानाचार्य, आयुर्वेदिक एवं यूनानी तिब्बिया कॉलेज, नई दिल्ली, डॉ. सईद अहमद, एसोसिएट प्रोफेसर, फार्माकोग्नॉसी एण्ड फाइटोकेमिस्ट्री, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली और डॉ. सीमा अकबर, प्रभारी, क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, श्रीनगर ने की। इस सत्र में प्रो.

कविता गुलाटी, वल्लभ भाई पटेल चैस्ट संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ने 'ब्रोन्कियल अस्थमा हेतु एक औषधि के रूप में इसके उपयोग का वैधीकरण करने के लिए एक पॉलीहर्बल यूनानी मिश्रण यूनिम-352 के कार्य की कोशिका और आणविक तंत्र पर प्रायोगिक अध्ययन' पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया और के.यू.चि.अ.प. के सहयोग से किए गए अध्ययन के उत्साहजनक परिणामों पर प्रकाश डाला। डॉ. मुनवर हुसैन काज़मी, उप निदेशक प्रभारी, राष्ट्रीय त्वचा रोग यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद ने 'निस्नान में एक यूनानी मिश्रण का नैदानिक अध्ययन' पर शोध पत्र प्रस्तुत किया और निस्नान (विस्मरण) के उपचार में माज़ून निस्नान के अनुसंधान के परिणाम पर प्रकाश डाला।

डॉ. ज़की अहमद सिद्दीकी, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) वैज्ञानिक—IV, डॉ. माहे आलम, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) और डॉ. शाह आलम, अनुसंधान सहयोगी (यूनानी),



श्री प्रमोद कुमार पाठक

के.यू.चि.अ.प. सत्र के प्रतिवेदक थे।

समापन सत्र

यूनानी चिकित्सा पर आयोजित दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन 12 फरवरी 2020 को इस नोट के साथ हुआ कि सभी चिकित्सा पद्धतियों का समाकलन और तालमेल होना आज दुनिया के सामने आ रही स्वास्थ्य चुनौतियों के समाधान के लिए समय की आवश्यकता है।

समापन सत्र को सम्बोधित करते

हुए श्री प्रमोद कुमार पाठक, अतिरिक्त सचिव, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए के.यू.चि.अ.प. की सराहना की और यूनानी चिकित्सा के लिए आयुष पुरस्कार प्राप्तकर्त्ताओं को बधाई दी। उन्होंने आगे कहा कि यूनानी चिकित्सा में स्वास्थ्य समस्याओं का उपचार करने की क्षमता है और अच्छे स्वास्थ्य एवं कल्याण के दीर्घकालिक विकास लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

अपने सम्बोधन में प्रो. सैय्यद ऐहतेशाम हसनैन, कुलपति, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली ने कहा कि यूनानी चिकित्सा अपने समग्र दृष्टिकोण के कारण लोगों को आकर्षित करती है परन्तु इसमें ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें गंभीर अनुसंधान एवं वैज्ञानिक वैधीकरण के साथ-साथ शीर्ष अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में डेटा के प्रकाशन की आवश्यकता है।

इस अवसर पर बोलते हुए प्रो. जावेद मुसरत, कुलपति, बाबा गुलाम शाह बादशाह विश्वविद्यालय, जम्मू



यूनानी चिकित्सा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन समारोह के दौरान केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् के एक प्रकाशन का विमोचन करते हुए गणमान्य व्यक्ति।



प्रो. सैय्यद एहतेशाम हसनैन



प्रो. जावेद मुसरत



डॉ. बी. करुणाकर रेड्डी

और कश्मीर ने हकीम अजमल खान के जन्मदिन को यूनानी दिवस के रूप में मनाने के लिए आयुष मंत्रालय की सराहना की।

डॉ. बी करुणाकर रेड्डी, कुलपति, कालोजी नारायण एवं स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, वरंगल, तेलंगाना ने उपचार के साथ-साथ रोगों की रोकथाम पर ध्यान देने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। उन्होंने अनुसंधान और स्वास्थ्य सेवा वितरण से संबंधी आंकड़ों के प्रलेखन की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला।

पदमश्री डॉ. एम.ए. वहीद, अध्यक्ष, यूनानी फार्माकोपिया समिति ने यूनानी चिकित्सा के वैश्वीकरण के लिए वैज्ञानिक मापदंडों पर पारंपरिक चिकित्सा पद्धति के वैधीकरण पर ज़ोर दिया।

इससे पूर्व अपनी समापन टिप्पणी में प्रो. आसिम अली खान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने दो-दिवसीय कार्यवाही को संक्षेप में बताया और सूचित किया कि सम्मेलन में आठ वैज्ञानिक सत्रों के दौरान 'वैश्विक स्वास्थ्य हेतु यूनानी चिकित्सा', 'यूनानी चिकित्सा में आधुनिक अनुसंधान', 'दीर्घकालिक

विकास लक्ष्य (एसडीजी-3) की प्राप्ति', 'यूनानी चिकित्सा में नवीन अनुसंधान', 'चिकित्सा पर्यटन – पारंपरिक चिकित्सा हेतु एक आशाजनक क्षेत्र', 'माँ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवा में एक एकीकृत दृष्टिकोण', 'जराचिकित्सा देखभाल हेतु यूनानी चिकित्सा और मस्कुलोस्केलेटल विकारों में संघटित चिकित्सा की भूमिका' और 'मानसिक स्वास्थ्य और श्वसन रोग हेतु यूनानी चिकित्सा' विषयों पर चर्चा हुई। सम्मेलन में 40 प्रस्तुतियों के अतिरिक्त पैनल चर्चा और विशेषज्ञ वार्ता हुई। भारत, अमेरिका, दक्षिण



पदमश्री डॉ. एम.ए. वहीद



प्रो. आसिम अली खान



डॉ. मोहम्मद ताहिर

अफ्रीका, श्रीलंका, बांग्लादेश, यूएई, ईरान, मलेशिया और जर्मनी से लगभग 1200 प्रतिनिधियों, संसाधन व्यक्तियों, शिक्षाविदों, शोधकर्त्ताओं तथा छात्रों ने भाग लिया।

यूनानी चिकित्सा हेतु आयुष पुरस्कार

यूनानी चिकित्सा पर अंतर्राष्ट्रीय

सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में यूनानी चिकित्सा हेतु आयुष पुरस्कार वितरण समारोह का भी आयोजन किया गया। विभिन्न यूनानी वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों को अनुसंधान, शिक्षण और अभ्यास के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

डॉ. अबिहा अहमद, अलीगढ़ मुस्लिम

विश्वविद्यालय, अलीगढ़ को यूनानी चिकित्सा में नैदानिक अनुसंधान के लिए, डॉ. महबूब खान रसूल, वेल्लोर प्रौद्योगिकी संस्थान, वेल्लोर को औषधि अनुसंधान के लिए और डॉ. मो. अन्ज़र आलम, राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान, बेंगलुरु को साहित्य अनुसंधान के लिए श्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार स्वरूप एक प्रमाण पत्र, शॉल और नकद राशि के रूप में रुपये 50,000/- दिए गए।

डॉ. मोहम्मद मोहसिन, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, को यूनानी चिकित्सा में नैदानिक अनुसंधान



यूनानी चिकित्सा के लिए आयुष पुरस्कार के प्राप्तकर्ता – (1) डॉ. अबीहा अहमद, (2) डॉ. महबूब खान रसूल, (3) डॉ. मो. अन्ज़र आलम, (4) डॉ. मोहम्मद मोहसिन, (5) डॉ. शारिक शम्सी, (6) डॉ. जावेद अहमद खान, (7) डॉ. अशिया सुल्ताना, (8) प्रो. मो. आफताब अहमद, (9) डॉ. अब्दुल हसीब अंसारी, (10) डॉ. सैय्यद रफतुल्लाह, और (11) प्रो. मो. अनवर।



यूनानी चिकित्सा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के दौरान केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् के एक प्रकाशन का विमोचन करते हुए गणमान्य व्यक्ति।

के लिए, डॉ. शारिक शम्सी, राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान, बेंगलुरु को औषधि अनुसंधान के लिए और डॉ. जावेद अहमद खान, मोहम्मदिया तिब्बिया कॉलेज, मालेगांव को साहित्य अनुसंधान के लिए युवा वैज्ञानिक पुरस्कार प्रदान किया गया। सभी को पुरस्कार स्वरूप एक प्रमाण पत्र, शॉल और नकद राशि के रूप में रुपये 100,000/- भेंट किए गए।

डॉ. अर्शिया सुल्ताना, राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान, बेंगलुरु को यूनानी चिकित्सा में नैदानिक अनुसंधान के लिए, प्रो. मो. आफताब अहमद, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली को औषधि अनुसंधान के लिए और डॉ. अब्दुल हसीब अंसारी, राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान, बेंगलुरु को साहित्य अनुसंधान के लिए श्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार प्रदान किया गया। सभी को पुरस्कार स्वरूप एक प्रमाण पत्र, शॉल और नकद राशि के रूप में रुपये 200,000/- दिए गए।

डॉ. सैय्यद रफतुल्लाह, पूरक एवं वैकल्पिक चिकित्सा प्रभाग, सशस्त्र सेना, रक्षा मंत्रालय, रियाद, सऊदी

अरब और प्रो. मो. अनवर, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ को क्रमशः यूनानी चिकित्सा में श्रेष्ठ अनुसंधानकर्ता और श्रेष्ठ शिक्षाविद् की श्रेणी में लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्रत्येक को एक प्रमाण पत्र, शॉल और नकद राशि के रूप में रुपये 200,000/- दिए गए।

के.यू.चि.अ.प. के प्रकाशनों का विमोचन

सम्मेलन के उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान गणमान्यों द्वारा के.यू.चि.अ.प. द्वारा प्रकाशित सम्मेलन स्मारिका, 'यूनानी मेडिसिन एण्ड रिसर्च ट्रेंड्स - ऐन इन्साइट' और 'यूनानी मेडिसिन: दि साइन्स ऑफ हेल्थ एण्ड हीलिंग - ऐन ओवरव्यू' का विमोचन किया गया। सम्मेलन के समापन सत्र के दौरान गणमान्यों द्वारा दो अन्य प्रकाशनों 'कराबादीन-ए-जलाली' और 'किताब-उल-मुर्शिद' नामक पुस्तकों का भी विमोचन किया गया।

स्मारिका में सम्मेलन के दौरान प्रस्तुत पत्रों के संक्षिप्त सार और ज्ञानसाधन व्यक्तियों/शोधकर्ताओं के

संक्षिप्त बायोस के अलावा गणमान्यों के 32 संदेश शामिल हैं। 'यूनानी मेडिसिन एण्ड रिसर्च ट्रेंड्स - ऐन इन्साइट' में तीन अध्याय शामिल हैं जो यूनानी चिकित्सा के अवलोकन और प्रणाली में हाल के अनुसंधानों की अंतर्दृष्टि प्रस्तुत करते हैं। 'यूनानी मेडिसिन : दि साइन्स ऑफ हेल्थ एण्ड हीलिंग - ऐन ओवरव्यू' चार अध्याय - परिचय; भारत में यूनानी चिकित्सा पद्धति; यूनानी चिकित्सा के प्रमुख सूचक; और यूनानी चिकित्सा का वैश्वीकरण के माध्यम से यूनानी चिकित्सा के इतिहास और विकास के बारे में अवलोकन प्रस्तुत करती है। 'कराबादीन-ए-जलाली' जलालुद्दीन अमरोहवी द्वारा मूल रूप से फारसी में लिखी गई पुस्तक है जो 'दि ड्रग्स एण्ड कॉस्मेटिक एक्ट, 1940' में शामिल है और इसमें 1000 परीक्षित यूनानी मिश्रणों का उल्लेख है, जबकि 'किताब उल मुर्शिद' प्रसिद्ध चिकित्सक मुहम्मद इब्न ज़करिया राजी (926 ई.) द्वारा लिखित चिकित्सा प्रमाणों पर एक सामान्य ग्रंथ है।



कै.यू.चि.अ.प. द्वारा फार्माकोविजिलेंस पर संगोष्ठी का आयोजन

विभिन्न आयुष संस्थानों में कार्यरत आयुष चिकित्सकों, अनुसंधानकर्त्ताओं और शिक्षाविदों को फार्माकोविजिलेंस के लक्ष्यों से अवगत कराने के उद्देश्य से केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (कै.यू.चि.अ.प.) ने 20 नवंबर 2019 को क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (क्षे.यू.चि.अ.सं.), चेन्नई में “आयुर्वेद, सिद्ध एवं यूनानी (एएसयू) औषधियों का फार्माकोविजिलेंस – उभरती प्रवृत्तियां और भविष्य की संभावनाएं” पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया।



3 नवम्बर 2019 को आयुर्वेद, सिद्ध एवं यूनानी (एएसयू) औषधियों का फार्माकोविजिलेंस – उभरती प्रवृत्तियां और भविष्य की संभावनाएं विषय पर आयोजित संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के दौरान मंच पर असीन गणमान्य व्यक्ति।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए श्री प्रमोद कुमार पाठक, अतिरिक्त सचिव, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने आयुष क्षेत्र में फार्माकोविजिलेंस और गुणवत्ता नियंत्रण की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। वैश्व स्तर पर हर्बल औषधियों की बढ़ती मांग की सराहना करते हुए उन्होंने गुणवत्ता और विनियामक अनुपालन को सुनिश्चित करने और भ्रामक विज्ञापनों पर नज़र रखने की आवश्यकता पर बल दिया।

इससे पूर्व अपनी स्वागत टिप्पणी में प्रो. आसिम अली खान, महानिदेशक, कै.यू.चि.अ.प. ने आयुष पद्धति में

फार्माकोविजिलेंस के तंत्र और अनुसंधान-कर्त्ताओं की भूमिका पर प्रकाश डाला। प्रो. एस.पी. त्यागराजन, पूर्व कुलपित, मद्रास विश्वविद्यालय और डीन (अनुसंधान), श्री रामचंद्र विश्वविद्यालय, चेन्नई और प्रो. डॉ. के. कनकवल्ली, महानिदेशक, केन्द्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद्, चेन्नई ने भी उद्घाटन सत्र को सम्बोधित किया।

प्रो. जुगल किशोर, सफ़दरजंग अस्पताल, नई दिल्ली ने ‘भारत का फार्माकोविजिलेंस कार्यक्रम’ पर मुख्य सम्बोधन दिया और पद्मश्री डॉ. एम.ए. वहीद, पूर्व निदेशक, केन्द्रीय

यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद ने ‘फार्माकोविजिलेंस – एक अनुसंधानकर्त्ता का परिप्रेक्ष्य’ पर विशेष सम्बोधन दिया।

तकनीकी सत्रों में डॉ. ग़ालिब, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, नई दिल्ली सहित विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों ने आयुष क्षेत्र में फार्माकोविजिलेंस के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। संगोष्ठी का समापन डॉ. एन. ज़हीर अहमद, प्रभारी, क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, चेन्नई के धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ।



आयुष मंत्री द्वारा रा.त्व.रो.यू.चि.अ.सं. का उद्घाटन

श्री श्रीपाद येस्सो नाईक, माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), आयुष मंत्रालय एवं राज्य रक्षा मंत्री, भारत सरकार ने 03 नवम्बर 2019 को ए.जी. कॉलोनी रोड, इर्रागड्डा, हैदराबाद में केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान से उन्नयित राष्ट्रीय त्वचा रोग यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (रा.त्व.रो.यू.चि.अ.सं.) का उद्घाटन किया।



श्री श्रीपाद येस्सो नाईक और श्री जी. किशन रेड्डी 3 नवम्बर 2019 को राष्ट्रीय त्वचा रोग यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के उद्घाटन के दौरान। साथ में श्री प्रमोद कुमार पाठक और प्रो. आसिम अली खान भी मौजूद हैं।

इस अवसर पर श्री जी. किशन रेड्डी, माननीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार, श्री प्रमोद कुमार पाठक, अतिरिक्त सचिव, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार और प्रो. आसिम अली खान, महानिदेशक, केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (के.यू.चि.अ.प.) उपस्थित थे।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री श्रीपाद येस्सो नाईक ने विटिलिगो और अन्य दीर्घकालिक एवं स्थायी रोगों के उपचार में के.यू.चि.अ.प. की सफलता की सराहना की और कहा कि यह दुनिया का शायद एकमात्र चिकित्सा संस्थान है जिसने अकेले विटिलिगो के 1.5 लाख

से अधिक रोगियों का उपचार किया है।

अपने सम्बोधन में श्री जी. किशन रेड्डी ने शोधकर्त्ताओं को सदिश जनित रोगों, गैर संचारी रोगों, कैंसर और तपेदिक जैसी प्रचलित स्वास्थ्य चुनौतियों के लिए सुरक्षित और व्यवहार्य समाधान खोजने के लिए आग्रह किया।

श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए श्री प्रमोद कुमार पाठक ने वर्तमान स्वास्थ्य चुनौतियों पर प्रकाश डाला और यूनानी चिकित्सा के किफायती उपचार के माध्यम से उनका समाधान करने और यूनानी चिकित्सा की क्षमताओं का प्रयोग करने का आग्रह किया।

इससे पहले अपने स्वागत सम्बोधन

में प्रो. आसिम अली खान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने कहा कि रा.त्व.रो.यू.चि.अ.सं. को के.यू.चि.अ.प. के अधीन एक प्रमुख संस्थान केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान से त्वचा रोग के क्षेत्र में इसके सराहनीय कार्य के लिए उन्नयित किया गया है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि रा.त्व.रो.यू.चि.अ.सं. के रूप में इसके उन्नयन के लिए माननीय आयुष मंत्री का दूरदर्शी निर्णय इसे अन्य रोगों के साथ-साथ त्वचा रोगों से ग्रसित रोगियों की स्वास्थ्य देखभाल और अनुसंधान के लिए अत्याधुनिक राष्ट्रीय सुविधा के रूप में विकास करने में सहायता करेगा। ●●●

कोविड-19 पर आयुष मंत्रालय ने यूनानी परामर्श जारी किए

कोविड-19 महामारी के मद्देनजर आयुष मंत्रालय ने जनवरी माह में जन समूह के लिए यूनानी चिकित्सा पर आधारित परामर्श जारी किए। चूंकि इस महामारी से बचने के लिए कोई दवा या वैक्सीन विकसित नहीं हुई है इसलिए परामर्श में कोरोनावाइरस के संभावित संक्रमण को रोकने के लिए रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

यूनानी चिकित्सा के अनुसार मानव के स्वास्थ्य की स्थिति पर परिवेश और पारिस्थितिक स्थितियों का प्रभाव पड़ता है। रोग का उपचार करने के अतिरिक्त यह रोग की रोकथाम और मौजूदा स्वास्थ्य को बढ़ावा देने पर अधिक जोर देती है। अतः परामर्श में आवश्यकता होने पर बीही दाना (साइडोनिया ऑबलंगा) — 3 ग्राम, उन्नाव (जिजिफस जुजूबा) — 5 दाने, सपिस्ता (कॉर्डिया मायक्सा) — 7 दाने का काढ़ा पीने को कहा गया। परामर्श में रोगनिरोधी उपाय के रूप



उन्नाव

में दिन में एक बार 3—5 ग्राम खमीरा मरवारीद का उपयोग करने का भी सुझाव दिया गया।

यूनानी चिकित्सा के साथ-साथ आयुर्वेद और होम्योपैथी पद्धति पर आधारित परामर्श को प्रेस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो और अन्य मीडिया तथा सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचारित किया गया। ●●●

71वें भारतीय फार्मास्युटिकल कांग्रेस में भागदारी

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (के.यू.चि.अ.प.) ने अपने क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (क्षे.यू.चि.अ.सं.), चेन्नई के माध्यम से 20—22 दिसम्बर 2019 के दौरान रामचन्द्र चिकित्सा कॉलेज, चेन्नई में भारतीय फार्मास्युटिकल कांग्रेस एसोसिएशन द्वारा आयोजित 71वें भारतीय फार्मास्युटिकल कांग्रेस में भाग लिया।



रामचन्द्र चिकित्सा कॉलेज, चेन्नई में 71वें भारतीय फार्मास्युटिकल कांग्रेस के दौरान आगंतुकों के साथ बातचीत करते हुए के.यू.चि.अ.प. कर्मचारी।

तीन-दिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. सी. सैलेन्द्र बाबू, पुलिस महानिदेशक (रेलवे), तमिलनाडु ने किया। कांग्रेस में दक्षिणी राज्यों के शिक्षाविदों, छात्रों, भेषजज्ञों एवं औषधि नियंत्रण अधिकारियों सहित 3000 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

के.यू.चि.अ.प. की टीम ने प्रकाशनों, प्रदर्शनी और पोस्टरों के प्रदर्शन, आई. ई.सी. सामग्री के वितरण और आगंतुकों से बातचीत के माध्यम से अपने स्टॉल से यूनानी चिकित्सा का प्रचार-प्रसार किया। लगभग 2000 प्रतिनिधियों ने के.यू.चि.अ.प. के स्टॉल का दौरा किया। ●●●

‘राइज़ इन उत्तर प्रदेश’ में के.यू.चि.अ.प. की भागीदारी

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (के.यू.चि.अ.प.) के औषधि मानकीकरण अनुसंधान संस्थान (औ.मा.अ.सं.), गाज़ियाबाद ने 14–16 फरवरी 2020 के दौरान गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश में एच.आर.आई.टी. ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स द्वारा आयोजित एक भव्य प्रदर्शनी ‘राइज़ इन उत्तर प्रदेश’ में भाग लिया।



‘राइज़ इन उत्तर प्रदेश’ कार्यक्रम के दौरान जेनरल वी.के. सिंह, माननीय सड़क परिवहन और राजमार्ग राज्य मंत्री, भारत सरकार परिषद् के अधिकारी से प्रचारप्रसार सामग्री प्राप्त करते हुए।

तीन दिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटन श्री संतोष कुमार गंगवार, माननीय श्रम एवं रोज़गार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), भारत सरकार ने माननीय सांसद डॉ. अनिल अग्रवाल एवं अन्य गणमान्यों की उपस्थिति में किया।

औ.मा.अ.सं. की टीम ने डॉ. वसीम अहमद, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) के नेतृत्व में के.यू.चि.अ.प. की भागीदारी का आयोजन किया और प्रकाशन तथा प्रदर्शनी सामग्री के प्रदर्शन, आई.ई.सी. साहित्य वितरण तथा अंगतुकों से बातचीत के माध्यम से यूनानी चिकित्सा में अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में परिषद् की गतिविधियों एवं उपलब्धियों को उजागर किया। डॉ. वसीम ने के.यू.चि.अ.प. के स्टॉल पर जनरल विजय कुमार सिंह, माननीय सड़क परिवहन और राजमार्ग राज्य मंत्री, भारत सरकार का स्वागत किया और परिषद् द्वारा प्रकाशित प्रचार–प्रसार सामग्री भेंट किया।



कोविड-19 उपचार हेतु प्रशिक्षण में परिषद् के अधिकारियों की भागीदारी

कोविड-19 उपचार हेतु मास्टर ट्रेनर के रूप में लगभग 3000 आयुष डॉक्टरों के साथ विभिन्न राज्यों से केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (के.यू.चि.अ.प.) के यूनानी चिकित्सकों/अधिकारियों को ऑनलाइन प्रशिक्षण दिया गया। ऑनलाइन प्रशिक्षण का आयोजन आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा कोविड-19 महामारी के उपचार के लिए आयुष जनबल तैयार करने के उद्देश्य से किया गया।

ऑनलाइन प्रशिक्षण में आयुष और नियंत्रण उपायों के लिए संचार, चिकित्सकों की भूमिका, प्रतिक्रिया सामुदायिक निगरानी, कलंक और

भेदभाव, सामुदायिक परिवारों के लिए सहायक सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएं, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के लिए संचार तथा व्यक्तिगत सुरक्षा पर केंद्रित सात सत्र शामिल थे।

ये मास्टर ट्रेनर के.यू.चि.अ.प. के अन्य अधिकारियों को प्रशिक्षित कर रहे हैं जो पूरे देश में आयुष छात्रों और अन्य क्षेत्र कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान करेंगे ताकि वे विभिन्न हितधारकों के निर्देशानुसार विभिन्न स्तरों पर कोविड-19 के उपचार में लग सकें।



कैंसर पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. का सम्बोधन

प्रो. आसिम अली खान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने 20 फरवरी 2020 को स्कूल ऑफ लाइफसाइंसेज़, जे.एन.यू., नई दिल्ली द्वारा आयोजित कैंसर की रोकथाम एवं उपचार पर 13वीं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी को सम्बोधित किया और आयुष पद्धतियों की क्षमताओं का उपयोग करते हुए एकीकृत दृष्टिकोण पर ध्यान देने की आवश्यकता को उजागर किया।



प्रो. एम. जगदीश कुमार कैंसर पर आयोजित संगोष्ठी में प्रो. आसिम अली खान का अभिनंदन करते हुए।

प्रो. खान ने संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए कहा कि “कैंसर, मधुमेह, हृदय रोग एवं स्ट्रोक जैसे गैर-संक्रामक और जीवनशैली रोगों का बोझ बढ़ रहा है और कोई भी चिकित्सा पद्धति इनका अकेले उपचार करने में सक्षम नहीं है, ऐसे में आयुष चिकित्सा पद्धतियों की क्षमताओं का उपयोग करते हुए एकीकृत दृष्टिकोण अपनाने पर ध्यान देने की आवश्यकता है”। उन्होंने आयुष पद्धतियों और पारंपरिक चिकित्सा के चिकित्सकों, शोधकर्त्ताओं और शिक्षाविदों के मध्य नियमित वार्तालाप और निरंतर विचार-विमर्श पर जोर दिया। इस दिशा में किए गए प्रयासों पर प्रकाश डालते हुए प्रो. खान ने बताया कि आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार ने अपने अनुसंधान परिषदों

के माध्यम से देश के चुनिंदा जिलों में कैंसर, मधुमेह, हृदय रोग एवं स्ट्रोक की रोकथाम एवं नियंत्रण हेतु राष्ट्रीय कार्यक्रम (एन.पी.सी.डी.सी.एस.) के साथ आयुष पद्धतियों के एकीकरण के लिए विभिन्न परियोजनाएं लागू की हैं।

दो-दिवसीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को प्रो. एम. जगदीश कुमार, कुलपति, जे.एन.यू., प्रो. आर. के. काले, पूर्व कुलपति, केन्द्रीय गुजरात विश्वविद्यालय, प्रो. राजेश अग्रवाल, कोलोराडो विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका, प्रो. चिनथलपल्ली वी. राव, ओक्लाहोमा स्वास्थ्य विज्ञान केन्द्र विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका, प्रो. पॉलराज राजमणि, जे.एन.यू. और प्रो. राणा पी. सिंह, जे.एन.यू. ने भी सम्बोधित किया।

पंजीकरण सं. 34691/80

सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर

सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद, जो आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय है, की आधिकारिक त्रैमासिक पत्रिका है। यह हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में एक साथ प्रकाशित होती है। इसमें विशेषतः केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद से संबंधित समाचार होते हैं। यह ऐसे व्यक्तियों और संस्थाओं के लिए मुफ्त उपलब्ध है जो यूनानी चिकित्सा पद्धति के विकास में दिलचस्पी रखते हैं। सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर में प्रकाशित सामग्री को सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर के आभार के साथ, इस शर्त पर प्रकाशित किया जा सकता है कि वह प्रकाशन व्यापारिक उद्देश्यों से न किया जाये।

मुख्य संपादक

प्रो. आसिम अली खान

कार्यकारी संपादक

मोहम्मद नियाज़ अहमद

संपादकीय समिति

नाहीद परवीन
गज़ाला जावेद
जमाल अख्तर
शबनम सिद्दीकी

संपादकीय कार्यालय

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद
61-65, इंस्टीट्यूशनल एरिया, समुख 'डी' ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली-110 058

दूरभाष: +91-11-28521981, 28525982

फैक्स: +91-11-28522965

ई-मेल: unanimedicine@gmail.com

rop.ccrum@gmail.com

वेबसाइट: <http://ccrum.res.in>

मुद्रण: रैकमो प्रैस प्रा. लि.

सी-59, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1

नई दिल्ली-110020



CCRUM newsletter

A Quarterly Bulletin of Central Council for Research in Unani Medicine

Volume 40 • Number 1

January–March 2020

CCRUM Celebrates Unani Day

The Central Council for Research in Unani Medicine (CCRUM) celebrated Unani Day on February 11 in a grand manner and organized an International Conference on Unani Medicine at Vigyan Bhawan, New Delhi during February 11–12, 2020 to mark the occasion.

The event also marked distribution of AYUSH Awards for Unani Medicine, release of CCRUM publications, presentation of NABH accreditation certificate to NRIUMSD, Hyderabad and exhibition of industry.

International Conference

The international conference was organised on the theme '*Unani Medicine – Towards Achieving the Sustainable Development Goal*

(SDG-3) of 'Good Health and Well-Being'. It highlighted the role of Unani Medicine in attaining good health and wellbeing and emphasized the need for integration and synergy of all medical systems to address the health challenges we are facing today. In the presence of experts, luminaries and scholars of Unani Medicine, the conference provided an ample platform for healthy discussion and brainstorming of ideas and creation

of better avenues for achieving the sustainable development goal of good health and well-being. Besides inaugural and valedictory sessions, the conference had a panel discussion, expert talks and eight scientific sessions.

Inaugural Session

The international conference was inaugurated by Shri Rajnath Singh, Hon'ble Union Minister for Defence in the august presence of



Dignitaries on the dais singing National Anthem during the inaugural function of International Conference on Unani Medicine on February 11, 2020 at Vigyan Bhawan, New Delhi.



Shri Rajnath Singh

Shri Shripad Yesso Naik, Hon'ble Minister of State (IC) for AYUSH and Minister of State for Defence, Dr. Jitendra Singh, Hon'ble Minister of State (IC), Ministry of Development of North Eastern Region, Shri Vaidya Rajesh Kotecha, Secretary, Ministry of AYUSH, Shri Pramod Kumar Pathak, Additional Secretary, Ministry of AYUSH, Prof. Asim Ali Khan, Director General, CCRUM, Ministry of AYUSH and Dr. Mohammad Tahir, Advisor (Unani),



Dr. Jitendra Singh

Ministry of AYUSH, Government of India.

Inaugurating the international conference, Shri Rajnath Singh said that Unani Medicine is a unique system of medicine nurtured by the best of intellect of many cultures and civilizations. Due to its accessibility, affordability and holistic approach, it has been fulfilling health care needs of the people even in the far-flung areas of the country. He further said that



Shri Shripad Yesso Naik

the system can play an important role in finding solutions for various health challenges including non-communicable diseases.

Addressing the conference, Dr. Jitendra Singh emphasized the need for an inclusive and integrated health care regime that should guide health policies and programmes in future. He emphasized that there is a worldwide resurgence of interest in holistic systems of health care, particularly with respect to the prevention and management of chronic, non-communicable and systemic diseases.

In his address, Shri Shripad Yesso Naik said that Unani Medicine with its cost-effective remedies can offer solution to health challenges of ageing population, emergence of chronic diseases, environmental and climate change related health risks and also to the lack of access to quality health care. He added that the Ministry of AYUSH is focused to tap the real potential of AYUSH systems in imparting preventive,



A view of the august audience in the inaugural session of international conference.

promotive and holistic healthcare to the people.

Addressing the conference, Vaidya Rajesh Kotecha advocated for pluralistic and integrated approach to health by way of making traditional systems of medicine more accessible in the health care delivery system. He underscored the need for incorporating information technology in AYUSH health



Vaidya Rajesh Kotecha

care delivery and highlighted IT initiatives of the ministry.

Earlier in his welcome address, Prof. Asim Ali Khan, Director General, CCRUM said that the CCRUM is progressing well in its mandate of research and development in Unani Medicine. He extended his gratitude to Hon'ble AYUSH Minister for upgrading the Central Research Institute of Unani Medicine (CRIUM), Hyderabad to National Research Institute of Unani Medicine for Skin Disorders (NRIUMSD).

The occasion also witnessed



Prof. Asim Ali Khan receiving NABH accreditation certificate of NRIUMSD, Hyderabad from Shri Atul Kochhar, CEO and Shri R. P. Singh, Secretary General, NABH, Quality Council of India.

presentation of NABH accreditation certificate to NRIUMSD, Hyderabad by Shri R. P. Singh, Secretary General and Shri Atul Kochhar, CEO, NABH, Quality Council of India to Director General, CCRUM.

Panel Discussion

The panel discussion session was themed on 'Traditional Health Knowledge: Innovative Solutions for Contemporary Healthcare'.

Prof. Seyed Ehtesham Hasnain, Vice Chancellor, Jamia Hamdard, New Delhi and Prof. Ram Vishwakarma, Director, Indian Institute of Integrative Medicine, Jammu were moderators of the session, whereas Dr. D. S. Gangwar, Additional Secretary & Financial Advisor, Ministry of Health and Family Welfare, Govt. of India, Prof. Kunwar Mohammad Yusuf Amin, Department of Ilmul Advia, Ajmal



Distinguished audience in the inaugural session of international conference.



Panellists of the Panel Discussion Session on 'Traditional Health Knowledge: Innovative Solutions for Contemporary Healthcare' and Director General, CCRUM.

Khan Tibbiya College, Aligarh Muslim University, Aligarh, Dr. W. Selvamurthy, President, Amity Science, Technology and Innovation Foundation and Director General, Amity Directorate of Science and Innovation, Noida, Prof. Ritu Priya, Centre of Social Medicine and Community Health, Jawaharlal Nehru University, New Delhi, Prof. Imamuddin Ahmed, former Principal, Govt. Unani Medical College, Chennai, Dr. S. Farooq,

President, Himalaya Drug Company, Shri Pradeep Multani, Vice President, PHD Chamber of Commerce and Industry and Chairman, Multani Pharmaceuticals Ltd. and Hakim Mohsin Dehlvi, General Secretary, Unani Drug Manufacturers Association, New Delhi participated as the panellists.

The session began with the welcome note to the moderators and panellists of the session. In his opening remarks, Prof. Seyed

Ehtesham Hasnain said that in the wake of new health challenges like coronavirus there is a need to explore how Unani Medicine and other traditional medicine systems could be of relevance to address them.

Moderating the discussion, Prof. Ram Vishwakarma highlighted that the modern medicine has been enormously benefited from traditional systems of medicine. He further said that almost all the medicines used in CNS disorders, all the anticancer compounds used in clinics and antibiotics are derived from traditional medicine and therefore integration of traditional medicine with modern medicine is not a new phenomenon.

Dr. W. Selvamurthy said that Unani Medicine sees man as a whole; it considers physical, mental as well as spiritual status of human beings.

Prof. Yusuf Amin emphasized



Distinguished guests and audience singing National Anthem in the international conference.

that to find out innovative solutions for contemporary healthcare issues from Unani Medicine and other traditional medicines, we have to look at and use them according to their own pathological and pharmacological schemes rather than converting them into their molecular counterpart.

Dr. D. S. Gangwar talked about the importance of traditional medicine in our life and asserted that most of the lifestyle disorders like hypertension, obesity, and coronary artery diseases are preventable through AYUSH systems of medicine.

Prof. Ritu Priya focused on a sustainable healthcare system and environmental integrity. She discussed about the pharmaceutical industry and resultant pollution in the country. She also talked about how natural system of medicine can bring some innovation in healthcare system.

Dr. S. Farooq termed the AYUSH systems of medicine a blessing to the mankind and stressed the need to do more research in Unani Medicine and natural nutraceuticals like mango and jamun.

Prof. Imamuddin Ahmed highlighted the importance of Unani Medicine and said that this system is far efficient than modern system of medicine for treating diabetes, coronary heart disease, etc. He further said that the diseases like psoriasis and leucoderma are



Dr. D.S. Gangwar

curable in Unani Medicine.

Shri Pradeep Multani discussed about the status of Chinese system of medicine and suggested that proponents of Indian systems of medicine like Unani Medicine and Ayurveda should learn from it and come forward for the good health of the country through these systems.

Hakim Mohsin Dehlvi discussed about the sugar content in Unani medicines and stressed the need to address it as high content of sugar is not good for health.

Dr. Amanullah, Research Officer (Unani) Scientist – III, Dr. Tamanna Nazli, Research Officer (Unani), Dr. Shamim, Research Associate (Unani) and Dr. Kavita Negi, Research Associate (Botany) at the CCRUM were rapporteurs of the session.

Expert Talk

The expert talk session had Dr. A. Venkat Raman, Faculty of Management Studies, University of Delhi, New Delhi, Dr. Atul Mohan Kochhar, CEO, National Accreditation Board for Hospitals



Speakers of the Expert Talk Session – Prof. T. C. James, Dr. A. Venkat Raman and Dr. Atul Mohan Kochhar alongwith Prof. Asim Ali Khan.

& Healthcare Providers, New Delhi and Prof. T. C. James, Visiting Fellow, Research and Information System for Developing Countries, New Delhi as speakers.

Dr. A. Venkat Raman delivered his talk on 'Challenges in attaining SDG-3 focusing on health system enablers and their challenges'. He emphasized that focus should not be given only on clinical aspects of health but also on new dimensions from social to economic for preservation of health and prevention of diseases. He elaborated the pivotal role of human resources in the achievement of the targets of SDG-3 and laid emphasis on imparting proper training and mentoring of manpower and partnership with private sector and non-government organizations. He said that accountability and responsibility of stakeholders and transparency of systems are the key

to success and asserted that extensive planning, efficient coordination and governance among the related sectors are critical for overcoming determinants of health.

Dr. Atul Mohan Kochhar delivered his talk on 'Importance of quality assurance in healthcare services'. He highlighted the significance of quality assurance and role of National Accreditation Board for Hospitals and Healthcare Providers (NABH) and National Accreditation Board for Testing and Calibration Laboratories (NABL) in health sector.

Prof. T. C. James delivered a comprehensive talk on the role of traditional medicine in achieving SDG-3 and stressed that it follows the principles of integrated development including nutrition, physical, mental and social requirements of individuals and community along with sustainable

environment. He highlighted the fact that traditional medicine has a unique combination of accessibility and acceptability, safety, holistic and personalized approach and affordability which are helpful in achieving the goals of SDG-3.

Dr. Mohammad Fazil, Research Officer (Unani) Scientist-IV, Dr. Ahmad Sayeed, Research Officer (Unani) Scientist-III and Dr. Shagufta Parveen, Research Associate (Unani) at the CCRUM were rapporteurs of the session.

Scientific Session - I

Scientific Session - I was held on February 12, 2020 and the theme was 'Unani Medicine for Global Health'. The session was chaired by Prof. Ahmed Kamal, Pro-Vice Chancellor, Jamia Hamdard, New Delhi, Dr. S. J. S. Flora, Director, National Institute of Pharmaceutical Education and Research, Raebareli,



A group photo of the distinguished chairpersons, speakers and Director General, CCRUM for Scientific Session - I themed on Unani Medicine for Global Health.

Prof. Md Abdul Mannan, Vice Chancellor, Hamdard University, Bangladesh, Dr. Mohd Ashraf Ganie, Department of Endocrinology and Metabolism, Sher-i-Kashmir Institute of Medical Sciences, Srinagar, J&K and Dr. Munawwar Hussain Kazmi, Deputy Director Incharge, National Research Institute of Unani Medicine for Skin Disorders, Hyderabad.

Dr. Roy Upton, President, American Herbal Pharmacopoeia, USA delivered his presentation on 'Pharmacopeial Standards for Herbal Medicines' and stressed on integrated approach for healthcare. 'Too often modern research is presented as superior to traditional knowledge when in fact much of what is practiced in modern medicine is not evidence-based and much of traditional knowledge is evidenced-based', he said.

In her presentation on '*Ilāj bi'l-Ghidhā*' (Dietotherapy): A Core Mode of Unani Treatment – An Appraisal', Dr. M.U.Z.N. Farzana, Senior Lecturer, Institute of Indigenous Medicine, University of Colombo, Sri Lanka highlighted the importance of food and treatment through diets in Unani Medicine and presented classification of diets according to caloric value and production of chyme. She said that the management of several lifestyle disorders such as hypertension, diabetes, dyslipidaemia in Unani Medicine is by dietotherapy and

lifestyle modifications alone or as adjuvant with pharmacotherapy.

Dr. Mujeeb Hoosen, Coordinator, Unani Tibb, School of Community and Health Sciences, University of the Western Cape, South Africa presented his paper on 'The Role of Spirituality and Spiritual Care in Unani Medicine Education and Practice' and shed light on the current status of spirituality and spiritual care in Unani Medicine education and practice.

Dr. Master Alagan Govindan, Secretary, Association of Ayushpathi Malaysia, Malaysia presented his paper on 'The Scope of Practice of Unani Medicine in Malaysia' and informed that 95% of Malaysian women buy products for reproductive health problems online of which about 60% are from Unani Medicine and 95% of Malaysian older population buy Unani Medicine for geriatric care and anti-ageing therapies.

The fifth paper of the session was presented by Prof. Arman Zargaran,

Coordinator, International Affairs for Traditional Medicine, Ministry of Health & Professor, School of Persian Medicine, Tehran, Iran on 'Finding new medicines according to the Avicenna's knowledge: An example of traditional chamomile oil on carpal tunnel syndrome (CTS)' and claimed that due to its improving effect on symptoms, physical function, and minimal effects on some of electrodiagnostic parameters, chamomile oil could be applied as a complementary treatment in such CTS patients.

Dr. Pradeep Kumar, Research Officer (Pathology) Scientist-IV, Dr. Mokhtar Alam, Research Officer (Botany) and Dr. Sofia Naushin, Research Associate (Unani) at the CCRUM were rapporteurs of the session.

Scientific Session – II

Scientific Session – II was themed on 'Recent Researches in Unani Medicine'. It was chaired



Experts chairing the proceedings of Scientific Session - II.

by Prof. G.P. Talwar, Director (Research), Talwar Research Foundation, New Delhi, Dr. D. S. Gangwar, Additional Secretary & Financial Advisor, Ministry of Health and Family Welfare, Govt. of India, New Delhi, Dr. Majid Ahmed Talikoti, Surgical Oncology Specialist, Batra Hospital, New Delhi, Prof. Mohammad Faisal, Associate Professor, Department of Oral and Dentistry Surgery, Faculty of Dentistry, Jamia Millia Islamia, New Delhi, Hakim Mohsin Dehlvi, General Secretary, UDMA, New Delhi and Dr. Mohammad Fazil, Research Officer (Unani) Scientist-IV and Incharge, Hakim Ajmal Khan Institute for Literary & Historical Research in Unani Medicine, New Delhi.

Prof. Mohammad Akhtar Siddiqui, Department of Moalajat, School of Unani Medical Education and Research, Jamia Hamdard, New Delhi, Prof. S. Raisuddin, Department of Medical Elementology and

Toxicology, School of Chemical and Life Sciences, Jamia Hamdard, New Delhi, Prof. Tanveer Naved, Amity Institute of Pharmacy, Amity University, Noida, Prof. Iffat Zareen Ahmad, Department of Bioengineering, Integral University, Lucknow and Dr. Kiran Sanjay Bhise, Professor, Pharmaceutics and Principal, MCE Society's Allana Campus, Pune were speakers of the session.

Prof. Siddiqui delivered his presentation on 'Management of liver fibrosis and cirrhosis of liver in Unani Medicine' and discussed the results of a study conducted by him on Unani medicines for chronic liver diseases.

Prof. Raisuddin presented his paper on '*Kushtajāt* as biological response modifiers' and discussed the mechanism of drugs containing metals and minerals and important *Kushtajāt* used in Unani Medicine.

Prof. Tanveer Naved presented his paper on 'Nutraceuticals: Recent

advances and regulatory aspects in India'. He discussed the classification and scope of nutraceuticals and various nutraceuticals available in market and presented registration process of nutraceuticals in India.

Prof. Iffat delivered her presentation on '*In-vitro* and *in-vivo* study of hepatoprotective activity of *Nigella sativa* extracts in various germination stages'. She elucidated the study conducted by her on the drug concluding that methanolic sprout extract of *N. sativa* showed high protective activity in PCM-induced hepatotoxicity.

Dr. Kiran Sanjay Bhise was the last speaker of the session who delivered a presentation on 'Unani anti-psoriatic topical nano particulate drug delivery systems' and discussed the topic at length.

Dr. Abdul Raheem, Research Officer (Unani) Scientist-IV, Dr. Mustehasan, Research Officer (Unani) Scientist-II and Dr. Rukshanda Taiyab, Technical



Chairpersons, speakers and coordinator of Scientific Session - III

Officer (Unani) at the CCRUM were rapporteurs of the session.

Scientific Session – III

Scientific Session – III was focused on ‘Achieving Sustainable Development Goal (SDG-3)’. It was chaired by Prof. Surender Singh, Department of Pharmacology, AIIMS, New Delhi, Dr. Khalid bin Ibrahim, Director, Selangor State Health Department, Malaysia, Dr. Mushtaq Ahmad, former Director, Central Research Institute of Unani Medicine, Hyderabad, Prof. Syed Mahtab Ali, School of Unani Medical Education and Research, Jamia Hamdard, New Delhi, Dr. Shagufta Parveen, Incharge, Regional Research Institute of Unani Medicine, New Delhi and Dr. N. Zaheer Ahmed, Incharge, Regional Research Institute of Unani Medicine, Chennai.

Dr. Gayatri Vyas Mahindroo, Director, National Accreditation Board for Hospitals & Healthcare Providers, New Delhi, Dr. Mohammad Akram, Department of Tahaffuzi wa Samaji Tib, School of Unani Medical Education and Research, Jamia Hamdard, New Delhi, Dr. Jugal Kishore, Head, Department of Community Medicine, VMMC & Safdarjung Hospital, New Delhi and Dr. S. M. Arif Zaidi, Department of Jarahat, School of Unani Medical Education and Research, Jamia Hamdard, New Delhi were speakers. They

made deliberations on ‘Developing Standards for AYUSH Hospitals’, ‘Concept of Preventive Healthcare in Unani Medicine’, ‘Snapshots of National Health Program of India’ and ‘Successful Unani Intervention in the Cases of Buerger’s Disease’ respectively.

Dr. Nighat Anjum, Research Officer (Unani) Scientist-III, Dr. Usama Akram, Research Officer (Unani) and Dr. Fouzia Basheer, Research Associate (Unani) at the CCRUM were rapporteurs of the session.

Scientific Session – IV

‘Recent Researches in Unani Medicine’ was the theme of Scientific Session – IV. It was chaired by Prof. Mohammad Zahid Ashraf, Department of Biotechnology, Jamia Millia Islamia, New Delhi, Dr. S.K. Rajput, Director, AIISM and Professor, Amity Institute of Pharmacy, Amity University, Noida and Dr. Hakimuddin, Incharge, Regional Research Institute of Unani

Medicine, Bhadrak. The session had four presentations on ‘Efficacy of *Ma’jūn ‘Ushba*, a Unani formulation with reference to biochemical and immunological parameters in the management of rheumatoid arthritis (*Waja’ al-Mafāṣil*) – An experimental study’, ‘Exploring new drug delivery mechanism in Traditional Medicines’, ‘Validation of traditional Unani plant products and their ingredients for anticancer effect on hepatocellular carcinoma’ and ‘Comparison of Unani formulations *Zarūr-i-Qulā’* and *Jawārish Āmla Sāda* with allopathic antioxidants in the management of patients with early-intermediate stage oral submucous fibrosis’ by Dr. M. Rasool, School of Biosciences and Technology, VIT University, Vellore, Prof. Farhan Jalees Ahmad, Department of Pharmaceutics, School of Pharmaceutical Education & Research, Jamia Hamdard, New Delhi, Dr. Alpana S. Moghe, Head, Department of Cell & Molecular Biology, Rajiv Gandhi Institute



Dr. Hakimuddin, Dr. S.K. Rajput and Prof. Mohammad Zahid Ashraf chauring Scientific Session - IV.



A view of combined session on 'Medical Tourism – A Promising Area for Traditional Medicine' and 'Unani Medicine for Geriatric Care and Role of Regimenal Therapy in Musculoskeletal Disorders'.

of IT and Biotechnology, Bharati Vidyapeeth, Pune and Dr. Arpita Rai, Assistant Professor, Faculty of Dentistry, Jamia Millia Islamia, New Delhi respectively.

Dr. R.P. Meena, Research Officer (Chemistry) Scientist-III, Dr. Farah Ahmed, Research Officer (Unani) and Dr. Anju, Research Associate (Unani) at the CCRUM were rapporteurs of the session.

Scientific Session – V & VII

Session – V was dedicated for deliberation on 'Medical Tourism - A Promising Area for Traditional Medicine', whereas Session – VII was themed on 'Unani Medicine for Geriatric Care and Role of Regimenal Therapy in Musculoskeletal Disorders'. The two sessions were combined due to paucity of time. Prof. Y. K. Gupta, President, All India Institute of Medical Sciences, Bhopal, Dr. P.K. Sen, Additional Director General

of Health Services, New Delhi, Shri Arun Srivastava, Deputy Director General, Ministry of Tourism, Govt. of India, New Delhi, Dr. M. A. Waheed, Chairman, Unani Pharmacopeia Committee, Govt. of India, New Delhi, Prof. S. Shakir Jamil, former Director General, Central Council for Research in Unani Medicine, New Delhi, Prof. M. A. Jafri, Department of Ilmul Advia, School of Unani Medical Education and Research, Jamia Hamdard, New Delhi, Ms. Amina Al Haidan, Director, Lotus Holistic Institute, Abu Dhabi, Dr. Maqbool Ahmad Khan, Incharge, Central Research Institute of Unani Medicine, Lucknow, Dr. Sarfaraz Ahmad, Deputy Director, Regional Research Institute of Unani Medicine, Aligarh and Dr. Haseeb Alam, Incharge, Regional Research Institute of Unani Medicine, Mumbai chaired these sessions.

Dr. Deepika Gunawat, Sr.

Consultant, Max Multi Specialty Center, New Delhi, Dr. Claudia Preckel, Intercultural Trainer, University of Ruhr, Bochum, Germany and Dr. Ravi Reddy, Sri Sri Tattva, Bengaluru delivered their presentations on 'Modalities for setting up of wellness centers', 'More than wellness - baths, bathing and the role of the *Hammām* for medical tourism; and 'Medical tourism, a strategy to promote Traditional Medicine' respectively.

Prof. Mohd. Anwar, Department of Ilaj bit Tadbeer, Faculty of Unani Medicine, Aligarh Muslim University, Aligarh and Dr. S.M. Abbas Zaidi, Government Unani Medical College, Bhopal delivered their presentations on 'Regimenal therapies for health promotion in elderly people' and 'Concept of nose to brain drug delivery in Unani Medicine' respectively.

Dr. Saleem Siddiqui, Research Officer (Unani) Scientist-IV, Dr.



Chairpersons of Scientific Session - VI

Jamal Akhtar, Research Officer (Unani) Scientist-III, Dr. Bilal Ahmad, Research Officer (Unani) Scientist-III, Dr. Neelam Quddusi, Research Officer (Unani) Scientist-III, Dr. Nusrat Jahan, Research Associate (Unani) and Dr. Zeba Afrin, Research Associate (Unani) at the CCRUM were rapporteurs of the two sessions.

Scientific Session – VI

Scientific Session – VI was held on the topic ‘An integrative approach in mother and child healthcare’. It was chaired by Prof. Abdul Wadud, Director, National Institute of Unani Medicine, Bengaluru, Prof. M.M. Wamiq Amin, Head, Department of Mahiyat al-Amraz, Ajmal Khan Tibbiya College, AMU, Aligarh, Dr. Mukhtar Ahmad Qasmi, Joint Adviser (Unani), Ministry of AYUSH, Govt. of India and Dr. Yunus Iftekhhar Munshi, Research Officer (Unani) Scientist-IV and Incharge, Regional Research Institute of Unani

Medicine, Kolkata. The session had four presentations on ‘Integrative approach for maternal and child health’, ‘Dietary recommendations for mother and child’, ‘Child healthcare in Unani system of medicine’ and ‘Management of menstrual disorders - Few case studies’ by Prof. Suhail Fatima, Dean, School of Unani Medical Education and Research, Jamia Hamdard, New Delhi, Dr. Parmeet Kaur, Chief Dietician, All India Institute of Medical Sciences, New Delhi, Prof. Shaik Shahul Hameed,

Head, Department of Atfal, Markaz Unani Medical College, Kozikhode and Prof. Syeda Aamena Naaz, Department of Amraz e Niswan wa Atfal, Faculty of Unani Medicine, AMU, Aligarh respectively.

Dr. Asma Sattar, Research Officer (Chemistry) Scientist-III, Dr. Azma, Research Officer (Unani) Scientist-III and Dr. Saad Ahmad, Consultant (Unani) at the CCRUM were rapporteurs of the session.

Scientific Session – VIII

Scientific Session – VIII was based on ‘Unani Medicine for mental health and respiratory diseases’. It was chaired by Prof. Saud Ali Khan, Principal, Ajmal Khan Tibbiya College, Aligarh Muslim University, Aligarh, Prof. Mohd. Idris, Principal, Ayurvedic & Unani Tibbia College, New Delhi, Dr. Sayeed Ahmad, Associate Professor, Pharmacognosy & Phytochemistry, Jamia Hamdard, New Delhi and Dr. Seema Akbar, Incharge, Regional Research Institute of Unani



Experts chairing Scientific Session - VIII

Medicine, Srinagar. In this session, Prof. Kavita Gulati, Vallabhbhai Patel Chest Institute, University of Delhi, Delhi presented her paper on 'Experimental studies on the cellular and molecular mechanism of action of UNIM-352, a polyherbal Unani formulation, to validate its use as a drug for bronchial asthma' and highlighted the encouraging results of the study conducted in collaboration with the CCRUM. Dr. Munawwar Hussain Kazmi, Deputy Director Incharge, National Research Institute of Unani Medicine for Skin Disorders, Hyderabad presented a paper on 'Clinical study of a Unani formulation in *Nisyān*' and highlighted the outcome of research on *Ma'jūn Nisyān* in the treatment of amnesia. The study demonstrated a significant increase in MMSE score and reduction in signs and symptoms of the disease.

Dr. Zaki Ahmad Siddiqui, Research Officer (Unani) Scientist-IV, Dr. Mahe Alam, Research Officer



Shri Pramod Kumar Pathak

(Unani) and Dr. Shah Alam, Research Associate (Unani) at the CCRUM were rapporteurs of the session.

Valedictory Session

The two-day International Conference on Unani Medicine concluded on February 12, 2020 with the note that integration and synergy of all medical systems are the need of the hour to address the health challenges the world is facing today.

Addressing the valedictory session, Shri Pramod Kumar Pathak, Additional Secretary, Ministry of AYUSH, Government of India appreciated the CCRUM for organizing such a successful international conference and congratulated the recipients of AYUSH Awards for Unani Medicine. He further said that Unani Medicine has the capacity to manage health problems and play an important role in achieving the sustainable development goal of good health and well-being.

In his address, Prof. Seyed Ehtesham Hasnain, Vice Chancellor, Jamia Hamdard, New Delhi said that Unani Medicine attracts people because of its holistic approach but there are areas that need serious research and scientific validation as well as publication of data in top international journals.

Speaking on the occasion, Prof. Javed Musarrat, Vice Chancellor, Baba Ghulam Shah Badshah



Dignitaries releasing a CCRUM publication during Valedictory Session of International Conference on Unani Medicine.



Prof. Seyed Ehtesham Hasnain



Prof. Javed Musarrat



Dr. B. Karunakar Reddy

University, Jammu & Kashmir appreciated the Ministry of AYUSH for celebrating the birthday of Hakim Ajmal Khan as Unani Day. He laid emphasis on translational research and validation studies in Unani Medicine.

Dr. B. Karunakar Reddy, Vice Chancellor, Kaloji Narayana Rao University of Health Sciences, Warangal, Telangana emphasized the need to focus on prevention as well as cure. He also highlighted the need for documentation of data

related to research and health care delivery.

Padma Shri Dr. M.A. Waheed, Chairman, Unani Pharmacopoeia Committee laid emphasis on validation of traditional systems of medicine on scientific parameters for globalization of Unani Medicine.

Earlier in his wrap-up remarks, Prof. Asim Ali Khan, Director General, CCRUM summed up the two-day proceedings and informed that during the eight scientific sessions the conference had

deliberations on 'Unani Medicine for Global Health', 'Recent Researches in Unani Medicine', 'Achieving the Sustainable Development Goal (SDG-3)', 'Medical Tourism – A Promising Area for Traditional Medicine', 'Integrative Approaches for Mother and Child Health', 'Unani Medicine for Geriatric Care and Role of Regimenal Therapy in Musculoskeletal Disorders' and 'Unani Medicine for Mental Health and Respiratory Diseases'. The conference had 40 presentations



Padma Shri Dr. M.A. Waheed



Prof. Asim Ali Khan



Dr. Mohd Tahir

besides panel discussion and expert talk. Around 1200 delegates, resource persons, academicians, researchers and students from India, USA, South Africa, Sri Lanka, Bangladesh, UAE, Iran, Malaysia and Germany participated in the conference.

The conference concluded with

the vote of thanks proposed by Dr. Mohd Tahir, Advisor (Unani), Ministry of AYUSH.

AYUSH Awards for Unani Medicine

The inaugural session of the International Conference on Unani Medicine also accommodated the ceremony for conferment of

AYUSH Awards for Unani Medicine. Various Unani scientists and experts were honoured in recognition of their contributions in the area of research, teaching and practice of Unani Medicine.

The Best Research Paper Awards were presented to Dr. Abiha Ahmad, Aligarh Muslim University, Aligarh for clinical research, Dr. Mahaboob Khan Rasool, Vellore Institute of Technology, Vellore for drug research and Dr. Md. Anzar Alam, National Institute of Unani Medicine, Bengaluru for literary research in Unani



Recipients of AYUSH Awards for Unani Medicine - (1) Dr. Abiha Ahmad, (2) Dr. Mahaboob Khan Rasool, (3) Dr. Md. Anzar Alam, (4) Dr. Mohammad Mohsin, (5) Dr. Shariq Shamsi, (6) Dr. Javed Ahmed Khan, (7) Dr. Arshiya Sultana, (8) Prof. Mohd Aftab Ahmed, (9) Dr. Abdul Haseeb Ansari, (10) Dr. Syed Rafatullah, and (11) Prof. Mohd. Anwar.



Dignitaries releasing a CCRUM publication during Inaugural Session of International Conference on Unani Medicine.

Medicine. The awards comprised a citation, a shawl and a cash award of Rs 50,000 each.

The Young Scientist Awards were conferred on Dr. Mohammad Mohsin, Aligarh Muslim University, Aligarh for clinical research, Dr. Shariq Shamsi, National Institute of Unani Medicine, Bengaluru for drug research and Dr. Javed Ahmed Khan, Mohammadiya Tibbiya College, Malegaon for literary research in Unani Medicine. The awards in the category comprised a citation, a shawl and a cash award of Rs 100,000 each.

The Best Teacher Awards were presented to Dr. Arshiya Sultana, National Institute of Unani Medicine, Bengaluru for clinical research, Prof. Mohd. Aftab Ahmed, Jamia Hamdard, New Delhi for drug research and Dr. Abdul Haseeb Ansari, National Institute of Unani Medicine, Bengaluru for literary research in Unani Medicine. They were given a citation, a shawl and a cash award of Rs 200,000 each.

The Lifetime Achievement Awards were conferred on Dr. Syed Rafatullah, Complementary and Alternative Medicine Division, Armed Forces, Ministry of Defence, Riyadh, Saudi Arabia and Prof. Mohd. Anwar, Aligarh Muslim University, Aligarh for Best Researcher and Best Academician in Unani Medicine respectively. The awards comprised a citation, a shawl and a cash award of Rs 200,000 each.

Release of CCRUM Publications

During the inaugural function of the conference, the dignitaries released the Conference Souvenir, 'Unani Medicine and Research Trends – An Insight' and 'Unani Medicine: The Science of Health and Healing – An Overview' published by the CCRUM. The dignitaries also released two other publications of the CCRUM, namely 'Qarābādīn-i-Jalālī' and 'Kitāb al-Murshid' during the valedictory session of the conference.

The souvenir comprises 32

messages from dignitaries besides abstracts of papers presented during the conference and brief bios of resource persons / researchers, whereas 'Unani Medicine and Research Trends – An Insight' comprising three chapters presents an overview of Unani Medicine and an insight into recent researches in the system. 'Unani Medicine: The Science of Health and Healing – An Overview' presents an overview about the history and development of Unani Medicine through four chapters: Introduction; Unani System of Medicine in India; Major Milestones of Unani Medicine; and Globalization of Unani Medicine. Originally written in Persian by Jalaluddin Amrohvi, 'Qarābādīn-i-Jalālī' is included in 'The Drugs and Cosmetics Act, 1940' and comprises description of more than 1000 tested Unani formulations, while 'Kitāb al-Murshid' is a general treatise on medical aphorisms authored by legendary physician Muhammad b. Zakariyya Razi (d. 926 AD).



CCRUM Organizes Seminar on Pharmacovigilance

With a view to acquainting AYUSH practitioners, researchers and academicians working in different AYUSH institutions with the pharmacovigilance objectives, the Central Council for Research in Unani Medicine (CCRUM) organized a Seminar on Pharmacovigilance of ASU Drugs - Emerging Trends and Future Prospects at its Regional Research Institute of Unani Medicine, Chennai on November 20, 2019.



Dignitaries on the dais during the inaugural session of Seminar on Pharmacovigilance of ASU Drugs – Emerging Trends and Future Prospects on November 20, 2019.

Inaugurating the seminar, Shri Pramod Kumar Pathak, Additional Secretary, Ministry of AYUSH, Government of India highlighted the necessity of pharmacovigilance and quality control in AYUSH sector. Appreciating increasing demand of herbal medicines at global level, he underscored the need to ensure quality and regulatory compliance and keep a tab on misleading advertisements.

Earlier in his welcome address, Prof. Asim Ali Khan, Director General, CCRUM shed light on the mechanism of pharmacovigilance

in AYUSH systems and the role of researchers.

Prof. S. P. Thyagarajan, Former Vice Chancellor, University of Madras and Dean (Research), Sri Ramachandra University, Chennai and Prof. Dr. K. Kanakavalli, Director General, Central Council for Research in Siddha, Chennai also addressed the inaugural session.

Prof. Jugal Kishore, Safdarjung Hospital, New Delhi delivered the keynote address on 'Pharmacovigilance Program of India' and Padma Shri Dr. M. A. Waheed, former Director,

Central Research Institute of Unani Medicine, Hyderabad delivered the special address on 'Pharmacovigilance – A Researcher's Perspective'.

Later in the technical sessions, experts from various disciplines including Dr. Galib, Associate Professor, All India Institute of Ayurveda, New Delhi elaborated on various aspects of pharmacovigilance in AYUSH sector. The seminar concluded with the vote of thanks by Dr. N. Zaheer Ahmed, Incharge, Regional Research Institute of Unani Medicine, Chennai. ●●●

AYUSH Minister Inaugurates NRIUMSD

Shri Shripad Yesso Naik, Hon'ble Minister of State (IC) for AYUSH and Minister of State for Defence, Government of India inaugurated National Research Institute of Unani Medicine for Skin Disorders (NRIUMSD) upgraded from Central Research Institute of Unani Medicine (CRIUM) at AG Colony Road, Erragadda, Hyderabad on November 03, 2019.



Shri Shripad Yesso Naik and Shri G. Kishan Reddy alongwith Shri Pramod Kumar Pathak, Prof. Asim Ali Khan and others during the inauguration of NRIUMSD, Hyderabad on November 03, 2019.

Shri G. Kishan Reddy, Hon'ble Minister of State for Home Affairs, Govt. of India, Shri Pramod Kumar Pathak, Additional Secretary, Ministry of AYUSH, Government of India and Prof. Asim Ali Khan, Director General, CCRUM were present on the occasion.

Speaking on the occasion, Shri Shripad Yesso Naik lauded the success of the CRIUM in the treatment of vitiligo and other chronic and stubborn diseases and said that it's perhaps the only medical institution in the world which has treated more than 1.5

lakh patients of vitiligo alone.

In his address, Shri G. Kishan Reddy urged the researchers to find safe and viable solutions to prevalent health challenges, such as vector borne diseases, non-communicable diseases, cancer and tuberculosis.

Addressing the audience, Shri Pramod Kumar Pathak highlighted current health challenges and urged to exploit the potential of Unani Medicine in addressing them through its cost-effective remedies.

Earlier in his welcome address, Prof. Asim Ali Khan,

Director General, Central Council for Research in Unani Medicine (CCRUM) said that the NRIUMSD has been upgraded from the Central Research Institute of Unani Medicine (CRIUM), a premier institute under the CCRUM, for its commendable work in the field of skin disorders. He hoped that the visionary decision of Hon'ble AYUSH Minister for its upgradation as NRIUMSD would help it to develop as a state-of-the-art national facility for research and patient care for skin disorders along with other diseases. ●●●

Ministry of AYUSH Issues Unani Advisory in the Wake of Covid-19

The Ministry of AYUSH issued a public advisory in the month of January in the wake of the outbreak of COVID-19 pandemic. As no medicine or vaccine developed yet, the advisory focused on boosting immunity to prevent possible infection of Coronavirus.

Unani Medicine recognizes the influence of surroundings and ecological conditions on the state of health of human beings. Apart from treating disease conditions, it lays great emphasis on the prevention of disease and promotion of existing health. The advisory, therefore,

advocated taking sips of decoction of *Behi dana* (*Cydonia oblonga*) (3gm), *Unnab* (*Zizyphus jujuba*) (5 pcs.), *Sapistan* (*Cordia myxa*) (7 pcs.) as and when required. The advisory also suggested the use of *Khamira Marwareed* 3-5 gm once a day as prophylactic measure.



Unnab

The advisory, along with advocacy from Ayurveda and Homoeopathy systems, was propagated through Press Information Bureau and other media as well as social media platforms.



Participation in 71st Indian Pharmaceutical Congress

The CCRUM through its Regional Research Institute of Unani Medicine, Chennai participated in 71st Indian Pharmaceutical Congress organized by the Indian Pharmaceutical Congress Association at Ramachandra Medical College, Chennai during December 20–22, 2019.



CCRUM officials interacting with visitors during 71st Indian Pharmaceutical Congress at Ramachandra Medical College, Chennai.

The three-day event was inaugurated by Dr. C. Sylendra Babu, Director General of Police (Railways), Tamil Nadu. More than 3000 delegates including academia, students, pharmacists and drug control officers from southern states participated in the congress.

The CCRUM team propagated Unani Medicine from its stall through display of publications, translites and posters, distribution of IEC materials and interactions with the visitors. Around 2000 delegates visited the CCRUM stall.



CCRUM Participates in ‘Rise in Uttar Pradesh’

The CCRUM’s Drug Standardization Research Institute of Unani Medicine (DSRI), Ghaziabad participated in ‘Rise in Uttar Pradesh’, a mega exhibition organized by HRIT Group of Institutions at Ghaziabad, Uttar Pradesh during February 14–16, 2020.



General V.K. Singh, Hon’ble Minister of State for Road Transport & Highways receiving IEC literature from a CCRUM officer during ‘Rise in Uttar Pradesh’.

The three-day event was inaugurated by Shri Santosh Kumar Gangwar, Hon’ble Minister of State for Labour and Employment (Independent Charge), Government of India in the presence of Hon’ble Member of Parliament Dr. Anil Aggarwal and other dignitaries.

The DSRI team led by Dr. Mohd Wasim Ahmed, Research Officer (Unani) organized the CCRUM’s participation and highlighted its activities and achievements in the area of research and development in Unani Medicine showcasing publications and display materials, distributing IEC literature and engaging in interactions with the visitors. Dr. Wasim welcomed and presented IEC literature published by the CCRUM to General Vijay Kumar Singh, Hon’ble Minister of State for Road Transport and Highways at the CCRUM stall.



CCRUM Officers Participate in Training for Covid-19 Management

Unani physicians / officers of the CCRUM from different states along with around 3000 AYUSH doctors were trained online as Master Trainers for the management of COVID-19. The training was organized by the Ministry of AYUSH, Government of India with the objective of preparing AYUSH workforce for the management of COVID-19 pandemic.

The online training comprised seven sessions focusing on the role of AYUSH practitioners, communication for response and containment measures, community surveillance, stigma and

discrimination, supportive public health services for community households, communication and personal safety for health workers.

These Master Trainers are further training other officers of CCRUM who would provide training to AYUSH students and other field workers throughout the country so that they are equipped to get engaged in the management of COVID-19 at different levels as per direction from various stakeholders.



DG, CCRUM Addresses International Symposium on Cancer

Prof. Asim Ali Khan, Director General, CCRUM addressed 13th International Symposium on Cancer Prevention and Treatment organized by the School of Life Sciences, JNU, New Delhi on February 20, 2020. He highlighted the need to focus on integrative approach employing potentials of AYUSH systems.



Prof. Jagadesh Kumar felicitating Prof. Asim Ali Khan during the symposium on cancer.

“As the burden of non-communicable and lifestyle diseases like cancer, diabetes, cardiovascular diseases and stroke is increasing and no medical system is able to manage them singly, there is a need to focus on integrative approach employing potentials of AYUSH systems”, said Prof. Khan addressing the inaugural session of the symposium. He emphasized on systematic dialogue and continuous deliberations between practitioners of AYUSH systems and conventional medicine as well as researchers and academicians. Highlighting the efforts in this direction, Prof. Khan informed that the Ministry of AYUSH, Government of India through its research councils has

implemented different projects for integration of AYUSH systems with National Programme for Prevention and Control of Cancer, Diabetes, Cardiovascular Diseases and Stroke (NPCDCS) in selected districts of the country.

The inaugural session of the two-day symposium was also addressed by Prof. M. Jagadesh Kumar, Vice Chancellor, JNU, Prof. R. K. Kale, former Vice Chancellor, Central University of Gujarat, Prof. Rajesh Agarwal, University of Colorado, USA, Prof. Chinthalapally V. Rao, University of Oklahoma Health Sciences Center, USA, Prof. Paulraj Rajamani, JNU and Prof. Rana P. Singh, JNU, New Delhi.

Registration No. 34691/80

About CCRUM Newsletter

The CCRUM Newsletter is a quarterly official bulletin of the Central Council for Research in Unani Medicine – an autonomous organization of the Ministry of Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha and Homoeopathy (AYUSH), Government of India. It is published bilingually in Hindi and English and contains news chiefly about the works and activities of the CCRUM. It is free of charge to individuals as well as to organizations interested in the development of Unani Medicine. Material published in the bulletin may be reproduced provided credit is given to the CCRUM Newsletter and such reproduction is not used for commercial purposes.

Editor-in-Chief

Asim Ali Khan

Executive Editor

Mohammad Niyaz Ahmad

Editorial Board

Naheed Parveen

Ghazala Javed

Jamal Akhtar

Shabnam Siddiqui

Editorial Office

CENTRAL COUNCIL FOR
RESEARCH IN UNANI MEDICINE
61-65, Institutional Area,
Janakpuri, New Delhi - 110 058

Telephone : +91-11-28521981, 28525982

Fax : +91-11-28522965

E-mail: unanimedicine@gmail.com

rop.ccrum@gmail.com

Website: <http://ccrum.res.in>

Printed at: Rakmo Press Pvt. Ltd., C-59, Okhla
Industrial Area, Phase-I, New Delhi - 110020